



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

Mah
५/२/१९९९

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 236]
No. 236]नई दिल्ली, मंगलवार, अक्टूबर 20, 1998/आश्विन 28, 1920
NEW DELHI, TUESDAY, OCTOBER 20, 1998/ASVINA 28, 1920

वाणिज्य मंत्रालय

प्रारंभिक निष्कर्ष

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 अक्टूबर, 1998

विषय : जापान, पुर्तगाल, स्पेन और इटली से एक्रीलिक फाइबर के आयात से संबंधित एन्टी-डम्पिंग जांच-प्रारंभिक निष्कर्ष ।

सं. 32/1/97-एडीडी.—सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 यथा संशोधित, 1995 और सीमा शुल्क (डम्प की गई मदों पर एण्टी-डम्पिंग शुल्क की पहचान, निर्धारण और वासूली तथा क्षति निश्चित करने के लिए) नियम, 1995 के मद्देनजर ;

क. प्रक्रिया :

I. जांच के सम्बन्ध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है ;

(i) उपरोक्त नियमों के अधीन पदनामित प्राधिकारी (एतत्पश्चात प्राधिकारी भी कहा जाए), का क्रमशः इण्डियन एक्रीलिक लि., पशुपति एक्रीलिक लि., जे. के. सिंथेटिक लि. और कान्सोलिडेटेड फाइबरस एण्ड कैमिकल्स लि. (एतत्पश्चात इन्डियन एक्रीलिक, पशुपति, जे. के. और कान्सोलिडेटेड कहा जाये) से घरेलू उद्योग के ओर से एक लिखित आवेदन पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें जापान, पुर्तगाल, स्पेन तथा इटली से शुरू हुए या निर्यात किये गये एक्रीलिक फाइबर के डम्पिंग (एतत्पश्चात विषयाधीन माल भी कहा जाये) का आरोप लगाया गया ।

(ii) याचिकाकर्ता द्वारा दायर आवेदन की प्रारंभिक समीक्षा से कुछ कमियां प्रकट हुईं; जो बाद में याचिकाकर्ता द्वारा सुधारी

गईं। इसलिए याचिका को उचित दस्तावेज माना गया;

- (iii) प्राधिकारी ने, याचिकाकर्ता द्वारा पेश किये गये पर्याप्त सबूत के आधार पर जापान, पुर्तगाल, स्पेन तथा इटली से एक्रीलिक फाइबर के आयात के खिलाफ जांच शुरू करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने नियमों के उप-नियम 5(5) के अनुकूल जांच कार्यवाही शुरू करने से पूर्व डम्पिंग आरोप प्राप्त होने के विषय में जापान, पुर्तगाल, स्पेन तथा इटली के दूतावासों को अधिसूचित किया ;
- (iv) प्राधिकारी ने 7 जनवरी 1998 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की, जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया, जिसमें जापान, पुर्तगाल, स्पेन तथा इटली (एतत्पश्चात विषयाधीन देश भी कहा जाय) से शुरू या आयात किये गये एक्रीलिक फाइबर जिसे सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 की अनुसूची I के कस्टम कोड 550330 के अधीन वर्गीकृत किया गया है, के आयात से संबंधित एन्टी-डम्पिंग जांच शुरू की गई ;
- (v) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनके विवरण याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध कराये गये), उद्योग संगठनों को अग्रेषित किया और नियम 6(2) के अनुकूल लिखित में उन्हें अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर दिया ;
- (vi) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति भारत में एक्रीलिक फाइबर के ज्ञात सभी आयातकों (जिनका विवरण याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध कराया गया) की अग्रेषित की और पत्र जारी होने की तिथि से चालीस दिन के अन्दर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने के लिए उन्हें सलाह दी ;

- (vii) गत तीन वर्षों में, जाँच अधिकारी को शामिल करते हुए, भारत में एक्रीलिक फाइबर के आयात का विवरण देने के लिए केन्द्रीय उत्पाद व सीमा सूचक बोर्ड (सीबीईसी) से अनुरोध किया गया। यद्यपि सीबीईसी से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई;
- (viii) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम 6(3) के अनुकूल ज्ञात निर्यातकों और विषयाधीन देशों के दूतावासों को याचिका को प्रति प्रदान की। अन्य इच्छुक पार्टीयों को भी, निवेदन करने पर याचिका की प्रति प्रदान की गई;
- (ix) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुकूल, निम्नांकित ज्ञात निर्यातकों को संगत सूचना को सुस्पष्ट करने के लिए एक प्रश्नावाली भेजी।
 - (a) कोमात्सुया कारपोरेशन-जापान
 - (b) फिब्रास सिन्टेटिकास डि पुर्तगाल-पुर्तगाल
 - (c) कोटील्हस यूरोपीयन्स फाइबर-स्पेन
 - (d) मॉन्ट फाइबर एस पी ए-इटली

कई पार्टीयों ने समय सीमा बढ़ाने का निवेदन किया, जिसे प्राधिकारी द्वारा चार सप्ताह बढ़ाया गया। प्रारंभिक निष्कर्षों को तय करने लिए बढ़ाये गये समय के उपरान्त प्राप्त उत्तरों पर विचार नहीं किया गया है।

निम्नांकित निर्यातकों ने उत्तर दिया :

I. जापान

- (a) आशाही केमिकल्स इन्डस्ट्रीज लि.
- (b) सुमिकिन बुसन कारपोरेशन
- (c) निकिमेन कारपोरेशन
- (d) मार्स्वेनि कारपोरेशन
- (e) मित्सुविशि रेयॉन एण्ड लि.
- (f) टोयोबो कं. लि.
- (g) कानेमत्सु कारपोरेशन
- (h) कोमात्सुया कारपोरेशन
- (i) इटोशु कारपोरेशन
- (j) मित्सुविशि कारपोरेशन
- (k) कनेका कारपोरेशन

II. इटली

- (a) मॉन्ट फाइबर एस पी ए

III. स्पेन

- (a) मॉन्ट फाइबर हिस्पानिया एस ए स्पेन
- (b) कोटील्हस एस्पाना एस ए

IV. पुर्तगाल

- (a) फिसिप
- (ix) विषयाधीन देशों के नई दिल्ली स्थित दूतावासों को नियम 6(2) के अनुकूल जाँच आरंभ करने की सूचना इस अनुरोध के साथ दी गई कि ये अपने देशों के निर्यातकों, उत्पादकों को निर्धारित समय के अन्दर प्रश्नावाली का उत्तर देने की

सलाह दें। ज्ञात नियातकों, उत्पादकों की सूची के साथ याचिका तथा निर्यातकों को भेजी गई प्रश्नावाली की प्रति भी दूतावास को भेजी गई।

- (xi) नियम 6(4) के अनुकूल आवश्यक सूचना देने के लिए एक्रीलिक फाइबर के निम्नांकित ज्ञात आयातकों को प्रश्नावाली भेजी गई;

- वर्धमान स्पिनिंग एण्ड जनरल मिल्स—सुधियाना
- नाहर स्पिनिंग मिल्स लि.—लुधियाना
- मालवा कॉटन स्पिनिंग मिल्स लि.—लुधियाना
- राजस्थान स्पिनिंग एण्ड बीविंग मिल्स लि.—नई दिल्ली
- विनसम टेक्सटाइल इण्डस्ट्रीज लि.—चण्डीगढ़
- सिद्धार्थ सुपर स्पिनिंग मिल्स लि.—नई दिल्ली
- भिवानी टेक्सटाइल मिल्स—हरियाणा
- आदिनाथ टेक्सटाइल्स लि.—लुधियाना
- श्रुति सिन्थेटिक्स लि.—उदयपुर
- अरहित स्पिनिंग मिल्स
- बॉसवारा सिंटेक्स लि.
- अटलान्टिक स्पिनिंग एण्ड बीविंग मिल्स
- अरहाम स्पिनिंग मिल्स, लुधियाना
- आशुपति टेक्सटाइल्स लि.

कुछ पार्टीयों ने समय सीमा बढ़ाने के लिए निवेदन किया, जो प्राधिकारी द्वारा चार सप्ताह बढ़ाने की अनुमति दी गई। निम्नांकित द्वारा प्रश्नावाली का उत्तर दाखिल किया गया है।

- एसोसिएशन ऑफ बूल मार्क निटवीयर—लुधियाना

- सुधियाना बूलन मिल्स—लुधियाना
- कोहीनूर बूलन मिल्स—लुधियाना
- ओसाखाल बूलन मिल्स—लुधियाना
- अरहाम स्पिनिंग मिल्स—सुधियाना
- वर्धमान स्पिनिंग एण्ड जनरल मिल्स लि.—लुधियाना
- नाहर फाइबर्स लि.—लुधियाना
- श्रुति सिन्थेटिक लि.—उदयपुर
- आदिनाथ टेक्सटाइल्स लि.—लुधियाना
- राजस्थान स्पिनिंग एण्ड बीविंग मिल्स लि.—नई दिल्ली
- मालवा कॉटन स्पिनिंग मिल्स लि.—लुधियाना

- (xii) याचिकाकर्ताओं से क्षति सम्बंधित अतिरिक्त सूचना माँगी गई, जिसको भी प्रस्तुत किया गया।

- (xiii) प्राधिकारी ने सहयोग कर रहे निर्यातकों और याचिकाकर्ताओं के परिसर पर उस सीमा तक मौके पर जाँच की, जहां तक आवश्यक समझा गया;

- (xiv) प्राधिकारी ने विभिन्न इच्छुक पार्टीयों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के गैर-गोपनीय पाठ को उपलब्ध कराया जिसे प्राधिकारी द्वारा सार्वजनिक फाइबर के रूप में रखा गया और इच्छुक पार्टीयों के निरीक्षण के लिए खुला रखा गया;

- (xv) उत्पादन की अधिकतम लागत निकालने के लिए लागत और बनाने तथा विषयाधीन माल को भारत में बेचने की लागत की जाँच समान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांत (जी ए ए पी) के

आधार पर की गई और याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत सूचना की जाँच यह सुनिश्चित करने के लिए की गई कि क्या डम्पिंग मार्जिन से कम एन्टी-डम्पिंग डियूटी घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त है। एक्रीलिक फाइबर निर्माता संगठन द्वारा पेश किया गया है कि जो के सिंथेटिक अब बन्द हो गया है इसलिए कम्पनी के सम्बन्ध में कोई सूचना प्रस्तुत करना कठिन है और इसलिए जो के सिंथेटिक लिमिटेड से उत्पादन लागत आँकड़ा प्राप्त नहीं किया जा सका।

(xvi) इस अधिसूचना में एक पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर पेश की गई सूचना का प्रकटीकरण है और इसलिए नियमों के अन्तर्गत प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया ;

(xvii) जाँच पहली अप्रैल, 1996 से 31 मार्च 1997 की अवधि में की गई।

ख. याचिकाकर्ता के दृष्टिकोण :

2. याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका और बाद की पेशी में निम्नांकित प्रमुख मुद्दों को उठाया है

(a) भारतीय उद्योग की सम्मिलित क्षमता 102000 मी. टन प्रतिवर्ष है। याचिकाकर्ता की सम्मिलित क्षमता भारत के कुल उत्पादन की सांख्यिकीय 75% है। याचिकाकर्ताओं ने एक्रीलिक फाइबर निर्माताओं के संगठन द्वारा व्यक्त समर्थन पेश किया है जो संयोजक हस्ताक्षरित है। याचिकाकर्ताओं ने पेश किया है कि यह संगठन अन्य भारतीय उत्पादकों का प्रतिनिधित्व करता है इसलिए याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत आवेदन घरेलू उद्योग की ओर से किया गया माना जाये और याचिकाकर्ता को घरेलू उद्योग माना जाये।

(b) अधिक से अधिक संयंत्रों के लगाने से आयातों पर निर्भरता घट गई है फिर भी काफी फाइबर आयात किया जाता है। भारी अधिशेष क्षमता, घरेलू बाजार की कमी तथा निर्यातकों में गिरावट के सामने यूरोप तथा जापान के निर्यातक घबराहट में बेचने और फाइबर को भारत में डम्प करने पर उतार हो गये हैं।

(c) चालू तथा भविष्य की मौँग को पूरा करने के लिए आज देश में पर्याप्त क्षमता है। वैश्वीय क्षमता भूमण्डलीय मौँग से काफी अधिक है और बहुत सारे उत्पादक अधिशेष क्षमता का सामना कर रहे हैं।

(d) याचिकाकर्ता ने जापान के ममले में जापान के बाजार में प्रचलित घरेलू मूल्य के आधार पर, पुर्तगाल के मामले में पुर्तगाल में प्रचलित घरेलू मूल्य तथा उत्पादन के निर्माण मूल्य के आधार पर, स्पेन के मामले में स्पेन के घरेलू बाजार में प्रचलित मूल्य तथा उत्पादन के निर्माण मूल्य के आधार पर और इटली के मामले में इटली के घरेलू बाजार में प्रचलित मूल्य तथा उत्पादन के निर्माण मूल्य के आधार पर सामान्य मूल्य का दावा किया है।

(e) याचिकाकर्ता ने निवेदन किया है कि एन्टी डम्पिंग डियूटी लगाने के उद्देश्य से समग्र ई यू को एक माना जाये क्योंकि

पुर्तगाल, स्पेन और इटली यूरोपीयन यूनियन के अधिन अंग हैं और 16 सदस्यीय यूरोपीयन यूनियन के अंग हैं जो यूरोपीयन देशों के बीच व्यापार, निर्यात और विक्रय जैसे सभी व्यापार अवशेष को समाप्त करता है। इसलिए जाँच-पड़ताल समस्त यूरोपीयन यूनियन के विरुद्ध होनी चाहिए।

(f) याचिकाकर्ता निम्न कारणों से क्षति का दावा कर रहा है :

- विषयाधीन देशों से आयात में वृद्धि।
- विषयाधीन देशों से आयात के बाजार भागीदारी में वृद्धि।
- बिक्री कीमत उत्पादन कीमत से काफी कम जिसके फलस्वरूप याचिकाकर्ताओं को भारी वित्तीय हानि।
- स्टॉक का उच्च स्तर। उच्च क्षमता उपयोग, उत्पादन और बिक्री उत्पादन की लागत तथा उच्च खण्डारण की लागत से नीचे बिक्री की कीमत पर है।
- लगातार डम्पिंग से उत्पन्न कठोर वित्तीय खिंचावों के कारण विस्तार करना उद्योग के लिए कठिन हो रहा है जिसके फलस्वरूप क्षति हो रही है और बाजार अवसर कम हो रहे हैं।
- निधियाँ उगाहते ही अत्यन्त कम क्षमता।
- भारी निवेदन में नकारात्मक लाभ।
- अनुसंधान व विकास के वित्तोपयण में अक्षमता।

ग. निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य इच्छुक पार्टियों के विचार :

आयातकों के विचार

(a) घरेलू उद्योग का यह दावा कि देश में पाँच इकाइयाँ हैं जिनकी स्थापित क्षमता 1,02,000 मी. टन है, तथ्यात्मक सूचना नहीं है। आगे कहा गया है कि जो के सिंथेटिक्स लि. को समाप्त कर दिया गया है और औद्योगिक एवं वित्तीय पुर्निमाण बोर्ड ने अधिग्रहण कर लिया है। कम्पनी पिछले तीन बर्षों से एक्रीलिक फाइबर का उत्पादन नहीं कर रही है।

(b) वर्तमान में प्रभावी क्षमता 70000 टन प्रतिवर्ष से अधिक नहीं है क्योंकि 1979 में स्थापित आई पी सी एल का संयंत्र अपना जीवन पूरा कर चुका है। पूर्वोक्त 70000 मी. टन की क्षमता में 36000 टन गोला बुना हुआ एक्रीलिक फाइबर तथा 34000 मी. टन बुना हुआ एक्रीलिक फाइबर शामिल है। देश की मौँग को पूरा करने के लिए यह क्षमता पर्याप्त नहीं है।

(c) एक्रीलिक फाइबर का उत्पयोग लगातार बढ़ रहा है क्योंकि यह ऊन सस्ता विकल्प है। देश में एक्रीलिक फाइबर के अपर्याप्त उत्पादन के कारण, एक्रीलिक का स्प्रिंगिंग और निटिंग उद्योग आयात पर निर्भर है।

(d) एक्रीलिक फाइबर का उत्पादन तथा आयात दोनों बढ़ रहा है क्योंकि एक्रीलिक फाइबर का उत्पयोग बढ़ रहा है। घरेलू उत्पादन सम्पूर्ण उद्योग की आवश्यकता पूरी करने में सक्षम नहीं है अतः आयात परमावशसक है।

(e) याचिका का दावा है कि खीन ने एक्रीलिक फाइबर का

आयात कम कर दिया है और यूरोप एक्रीलिक फाइबर का प्रमुख उत्पादक है, सत्य है।

(f) जापान की मारबेनी कोलाबरेशन में एक एक्रीलिक फाइबर संयंत्र स्थापित कर रही है जिसकी क्षमता 34000 टन होगी। यदि देश की क्षमता पर्याप्त होती तो इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय कंपनियाँ देश में ऐसा भारी निवेश करती।

(g) मेसर्स इन्डियन एक्रीलिक लि. डुर्पॉन्ट तकनीक के अधीन केवल सूखा बुना हुआ फाइबर उत्पन्न कर रहा है। देश में फाइबर के कुल आयात का 95% से अधिक गोला बुना हुआ फाइबर है इसलिए इन्डियन एक्रीलिक को क्षति सहने वाला नहीं माना जा सकता, इसलिए याचिका की पार्टी नहीं हो सकता। सूखे बुने हुए फाइबर का आयात नगण्य है। जापान, पुरुगाल और स्पेन सूखा बुना हुआ फाइबर नहीं उत्पन्न करते।

(h) भारत में एक्रीलिक फाइबर का बाजार स्पष्टतः गोला बुना हुआ और सूखा बुना हुआ फाइबर में विभाजित है। दोनों तरह के फाइबर विशिष्ट ब्रांड नाम देकर विपणन किये जाते हैं। सामान्य भारतीय बाजार में “इन्डिया फाइबर” को गोला बुना हुआ फाइबर तथा “सुपा फाइबर” को सूखा बुना हुआ फाइबर मानते हैं। “सुपा फाइबर” सदैव 7 से 10 रु. प्रति किं.ग्रा. की छूट पर विक्रिता है इसलिए सूखा बुना हुआ फाइबर गोले बुने हुए फाइबर के बराबर नहीं हो सकता। देश में एक्रीलिक फाइबर के आयात का 90% गोला बुला हुआ फाइबर है। ये दोनों भिन्न उत्पाद हैं क्योंकि इनकी प्रक्रिया भी भिन्न-भिन्न है। भीगे बुने हुए फाइबर तथा सूखे बुने हुए फाइबर से अने हुए धागे की रंगाई में काफी भिन्नता है। इसलिए ये दो भिन्न-भिन्न उत्पाद हैं।

(i) भारतीय निर्माता द्वारा किया जाने वाला उत्पादन बिल्कुल रोजमर्रा किस्म का है और एक्रीलिक उद्योग की सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता। घरेलू उद्योग की दावा कि निर्माण की प्रक्रिया, कच्चे माल की आवश्यकता और उत्पादन लागत फाइबर के किसी भी ‘डिनायर’ के लिए एक जैसी रहती है, गलत तथा भ्रामक है।

(j) भारतीय बाजार के सम्बन्ध में याचिकाकर्ता द्वारा पेश की गई एक्रीलिक फाइबर के उपयोग की लम्बी सूची भ्रामक सूचना है। भारत में एक्रीलिक फाइबर का 95% स्वेटर, शाल तथा कम्प्ल के उपयोग में साया जाता है।

(k) घरेलू निर्माता द्वारा विदेशी निर्माता द्वारा स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को दबा कर कमी की स्थिति उत्पन्न की जा रही है।

(l) चूंकी सीमा कर एवं सी.वी.डी. के भुगतान के पश्चात ही आयात दिया जा सकता है अतः एक्रीलिक फाइबर का आयात एक सस्ता स्थानापन नहीं है। इसका आयात सस्ती कीमतों के कारण उपलब्ध न होना है।

(m) घरेलू निर्माताओं द्वारा उत्पादों के लिए अधिक कीमत वसूलने की परम्परा है। उनके द्वारा उद्धृत कीमत का प्रमुख कच्चे माल अर्थात् एक्रीलोनी ट्रायल (ए.सी.एन.) जो एक्रीलिक

फाइबर का 90 प्रतिशत कच्चा माल है, के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। तथा जो सदैव डी.एम.टी.ए. कीमतों के नजदीक रहता है, डी.एम.टी. तथा पी.टी.ए. पोलिस्टर फाइबर के लिए कच्चा माल भी है। आज एक्रीलिक फाइबर की कीमत पोलिस्टर फाइबर से दोगुनी है। अतः एक्रीलिक फाइबर निर्माताओं द्वारा भारी मुनाफा कमाया जाता है।

(n) 1996-97 के दौरान ए.सी.एन. कीमतों में काफी गिरावट हुई है परंतु घरेलू निर्माताओं द्वारा अपनी कीमतों में कमी नहीं लाई गई तथा उन्होंने देश में एक्रीलिक फाइबर की कम आपूर्ति से पूर्ण लाभ उत्पादा हो। एक्रीलिक फाइबर निर्माताओं ने एक मंच बनाया है जो इस व्यापार को एकाधिकार पूर्ण बना रहा है।

(o) प्रार्थी का संयंत्र घोर अकुशलता से काम कर रहा है जिसके फलस्वरूप उनकी उत्पादन लागत अधिक है तथा वे इस लागत को उत्पादों की कीमत निर्धारण में जोड़ देते हैं। वर्ष 1996-97 में घरेलू उद्योग में 102000 एम.टी. उत्पादन स्थापित क्षमता के मुकाबले 61187 एम.टी. रहा। अतः वे क्षमता के लगभग 60 प्रतिशत पर कार्य कर रहे हैं, जिसके कारण उनकी उत्पादन लागत अधिक है।

(p) घरेलू उद्योग में नुकसान का मुख्य कारण महंगे संयंत्र, घटिया गुणवत्ता तथा भरोसमंद आपूर्ति का न होना। घरेलू उद्योग अपनी अकुशलता एंटी-डम्पिंग ड्यूटी के रूप में उपभोक्ताओं पर लादना चाहता है।

(q) एक्रीलिक फाइबर का घरेलू निर्माता अनुसंधान एवं विकास (आर.एण्ड.डी.) के प्रति इच्छुक नहीं हैं। वे फाइबर की बहुत कम किस्म बनाते हैं। इस उद्योग के पास श्रेष्ठ उत्पाद के निर्माण के लिए फाइबर के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं हैं। कर्ताई उद्योग पहले से ही मन्दी की अवस्था में है। किसी प्रकार के प्रतिबन्ध लगाने के प्रयास से मिलों के बन्द होने का खतरा है जिससे हजारों कामगार और जायेंगे। एंटी-डम्पिंग ड्यूटी से इस उद्योग की लागत ढांचे में बढ़ोतारी होगी। चूंकि एक्रीलिक फाइबर उन का स्थानापन उत्पाद है, अन्तिम उत्पाद का उपयोग मुख्य रूप से समाज के निम्नर्ग द्वारा किया जाता है जिस पर असर पड़ेगा। इस प्रकार के शुल्कों से प्रभावित देशों द्वारा भारत एक्रीलिक फाइबर उत्पादों के निर्माण के सम्बन्ध में बदले की कार्यवाही की जा सकती है।

(r) यहाँ यह बताना जरूरी है कि मैं. मितशबुशी रेयन कप्पनी लिमिटेड अपने ‘बोनेल’ तथा ‘फिनेल’ ब्रांडों में विशेष प्रकार का रेशे का निर्माण कर रही है। जापान का मैं. आर्थाई भी ‘कैशमिलान’ ब्रांड के नाम से विशेष प्रकार के रेशे का निर्माण कर रहा है। चूंकि कोई भारतीय निर्माता इस प्रकार के विशेष रेशे का निर्माण नहीं करता अतः इन रेशों को एंटी-डम्पिंग शुल्कों से बाहर रखा जाए।

II. निर्यातकों के विचार

(a) प्रार्थी नियम 2(ख) के अनुसार ‘घरेलू उद्योग’ की परिभाषा के अन्तर्गत नहीं आते। यह बताना जरूरी है कि प्रार्थीयों द्वारा

यह सुझाव दिया गया था कि रेशे उत्पादकों में से चार को घरेलू उद्योग का दर्जा दिया जाए। परंतु जे. के. सिंथेटिक जिसकी स्थापित क्षमता 24000 एम.टी. है, को बन्द कर दिया गया है तथा पिछले दो वर्षों से यह एक्रीलिक रेशे का निर्माण नहीं कर रहा है। इंडियन एक्रीलिक जिसकी स्थापित क्षमता 24,000 एम. टी. प्रतिवर्ष है को घरेलू उद्योग का दर्जा नहीं दिया जा सकता क्योंकि जांच अवधि के दौरान इसकी सहायक कम्पनी इंडियन केमिकल्स लि. ने जापान से एक्रीलिक रेशे का आयात किया गया है। अतः अब एक्रीलिक रेशे तथा पशुपति एक्रीलोन लिमिटेड बचते हैं जिनकी संपूर्ण स्थापित क्षमता 30,000 एम. टी. तथा वर्ष 1996-97 का कुल उत्पादन 29,940 एम. टी. है। यह कुल घरेलू उत्पादन का बहुत छोटा हिस्सा है। यह कुल उत्पादन का 50 प्रतिशत से कम है तथा उनकी संयुक्त क्षमता कुल स्थापित क्षमता का लगभग 30 प्रतिशत है। वर्ष 1996-97 के लिये कुल उत्पादन जिसमें आई. पी. सी. एम. भी शामिल है, 82819 एम. टी. रहा तथा प्रार्थी द्वारा उत्पादन के दिये गये आंकड़े सही नहीं हैं।

(b) डम्पिंग मार्जिन आदि की गणना ग्रेडबार की जानी चाहिये जैसा कि यू. एस. ए. से एक्रीलिक फाइबर के पूर्व मामले में किया था। जी. के. 3.0 डेनियर, के. 753.0 एम. टी. डेनियर, के. 756.0 डेनियर, एफ. के. एल. 25.0 डेनियर का कोई घरेलू निर्माण नहीं है। अतः इन ग्रेडों को जांच से मुक्त रखा जाए। घरेलू आजार में इन ग्रेडों के एक समान उत्पाद नहीं है।

(c) प्रार्थी को क्षति नहीं है।

(d) पिछले वर्षों में घरेलू उद्योग को हुई हानि में एक प्रार्थी के भाग में 1996-97 में कमी आई है। अन्य प्रार्थी जिन्हें पूर्व में हानि हो रही थी, जांच वर्ष के दौरान लाभ कमाने लगे, तीनों प्रार्थियों का उत्पादन एवं क्षमता का उपयोग अत्यधिक बढ़ गया है। वे कुल क्षमता के 98-107 प्रतिशत पर कार्य कर रहे हैं। एक्रीलिक फाइबर के निर्माण के लिये एक्रीलोनीटाईल (ए. सी. एन.) मुख्य कच्चे माल है। एक्रीलोनीटाईल की कीमत 1995 में अमरीकी डालर 1400 पी. एम. टी. से घटकर फरवरी 1997 में अमरीकी डालर 800 हो गई। घरेलू आजार में ए. सी. एन. की कीमत फरवरी 1995 में 50,000 रु. प्रति मी. टन से घटकर 1996-97 में 38,000 रु. प्रति मी. टन हो गई। प्रमुख कच्चे माल की कीमतों में कमी के साथ, निर्माण लागत में कमी आई है। फलस्वरूप विक्रय मूल्य में कमी आई है।

(e) मांग को पूरा करने के लिए प्रार्थी के पास पर्याप्त क्षमता नहीं है। भविष्य में भी घरेलू उद्योग तथा उसकी वर्तमान उत्पादन क्षमता भी यदि घरेलू उद्योग 100 प्रतिशत क्षमता उपयोग पर कार्य करती है तो भी एक्रीलिक फाइबर की बढ़ती हुई मांग को पूर्ण नहीं कर पायेगा।

(f) चूंकि आयात के प्रभाव का संचयी आंकलन ठोक नहीं है। यह देखते हुए कि विभिन्न निर्यातकों द्वारा भिन्न-

भिन्न ग्रेडों का निर्यात किया जा सकता है तथा डम्पिंग मार्जिन एवं क्षति की गणना निर्यातवार तथा ग्रेडबार किया जाएगा। अतः क्षति का आंकलन संचयी तौर पर करने के बजाय निर्यातकवार किया जाए।

- (g) आयातों में बढ़ोतरी का कारण पूर्ण क्षमता के उपयोग करने के बावजूद की घरेलू उत्पादकों द्वारा मांग पूरा न कर पाना है।
- (h) निर्यातकों ने घरेलू निर्माताओं के इस दावे का खंडन किया है कि उन्होंने फाइबर की बिक्री लागत मूल्य से कम कीमत पर विक्रय कर जाँच थर्ष में लाभ कमाया है। साथ ही क्षमता में वृद्धि करने की किसी भी एक्रीलिक फाइबर के उत्पादक की योजना नहीं है।
- (i) उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने की योग्यता का प्रश्न नहीं उठता। किसी भी उत्पादक की अनुसंधान एवं विकास की सुविधायें नहीं हैं।
- (j) यब बताया गया कि नियुक्त प्राधिकारी ने जापान में घरेलू कीमत के संबंध में कोमातसूया कारपेरेशन के प्रूफ के आधार पर जाँच करनी आरंभ की। यह बताना आवश्यक है कि यह बोजक नकली है; अतः एक कपटी तर्क के आधार पर शुरू की गई जाँच को उचित नहीं ठहराया जा सकता।
- (k) नियुक्त अधिकारी द्वारा तय की गई जाँच अवधि उचित नहीं है तथा निर्यातकों के लिये हानिकारक है। ऐसी अवधि चुनकर जो आरंभ करने की विज़िप्ट की तिथि से 9 महीने से अधिक है, नियुक्त प्राधिकारी एतिहासिक आंकड़ों की मांग कर रहे हैं जिनकी प्रचलित बाजार स्थितियों पर मामूली अवधा कोई प्रभाव नहीं है। चूंकि प्राधिकारी ने पहले अमरीका, थाइलैंड तथा दक्षिण कोरिया से एक्रीलिक फाइबर के आयात पर शुल्क लगाया था अतः इस अवधि जिसमें जापान से आयातों में वृद्धि हुई को चुनने के लिये प्रार्थी ने आंकड़ों में जानबूझकर हेराफेरी की। जापान से आयात में वृद्धि का कारण अमरीका, थाइलैंड तथा दक्षिण कोरिया पर धमकी स्वरूप शुल्क थे ना कि जापान द्वारा किसी प्रकार की डम्पिंग के कारण।
- (l) घरेलू उद्योग में उत्पादन लागत अधिक है जिसके मुख्य कारण इसकी अर्थव्यवस्था है। भारतीय उद्योग को अधिक ब्याज तथा आधारभूत ढांचे की कीमत बहन करनी पड़ती है जिसके फलस्वरूप इसे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा से बाहर होना पड़ता है। भारतीय उद्योग को इन कारणों से हुई क्षति को डम्पिंग से हुई क्षति नहीं कहा जा सकता।
- (m) याचिका में इस प्रकार का कोई प्रमाण नहीं है जिससे पता लगे कि कथित क्षेपण वाले आयातों तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के मध्य अकस्मात् सम्बन्ध है।

(n) एक्रीलिक यार्न के निर्यात के लिए बहुत से भारतीय उपभोक्ताओं ने आयातित फाइबर की खरीद की है जैसा कि इन उपभोक्ताओं ने इयूटी के निश्चित लाभों को हासिल किया है। यदि आयातित और उपभोग की गई एक्रीलिक फाइबर की मात्रा को निकाला जाये तो शेष मात्रा देशी क्षमता और व्यार्थिक उत्पादन का बहुत ही कम प्रतिशत बनता है।

(o) भारतीय फाइबर की गुणवत्ता बहिर्भूत है।

(p) जापान से निर्यात की गई एक्रीलिक फाइबर और घेरलू उद्योग द्वारा निर्मित एक्रीलिक फाइबर एक जैसे नहीं हैं, जबकि जापानी फाइबर बहुत अच्छी गुणवत्ता का है। “कंजूगेट” और “स्पेशल” फाइबर भिन्न हैं जिनका भारत में उत्पादन नहीं होता, अतः इनको जॉच की परिधि से भी निकाला जाना चाहिए। टी. ओ. डब्ल्यू, टी. ओ. पी., सिंथेटिक स्टेपल फाइबर कार्डिंग, काप्चड स्पष्ट रूप से पृथक वस्तु हैं, अतः इसको जॉच के दायरे से बाहर रखना चाहिए।

(q) पुर्तगाल, स्पेन और इटली में निर्यातकों की तरफ से कमिटी इंटर नेशनल डी ला रेओनेट डेस फाइबर सिंथेजीस (सी आई आर एफ एस) ने कहा है कि भारतीय उद्योग को हानि कथित डिप्पिंग के प्रभावों से आई हुई है और जिनके फलस्वरूप कथित डम्प आयात और घेरलू उद्योगों को अन्य कोई हानि के कोई अनियमित संबंध नहीं है। जहाँ तक आयात में बृद्धि का संबंध है, इन निर्यातों के 1995-96 में भारतीय बाजार में प्रवेश किया और इस प्रकार निर्यातों में बृद्धि सामान्य बात है। यह भी उल्लेख किया जाता है कि यूरोपियन निर्यातकों के व्यक्तिगत बाजार शेरय नगण्य हैं। आयात मूल्यों में गिरावट के संबंध में यह उल्लेख किया जाता है कि इस अवधि के दौरान एक्रीलिक फाइबर के विश्व में मूल्यों में आई सामान्य कमी के कारण आई है। यह भी उल्लेख किया जाता है कि उत्पादन में गिरावट के कारण कोई हानि नहीं है अपितु 1996-97 में उत्पादन में लगभग 12 प्रतिशत की बृद्धि हुई है। इसके आगे याचिका में दिये गये 1996-97 के अंत का स्टॉक बिक्री का 1.8 सप्ताह के बराबर है और इस प्रकार अधिक स्टॉक का कोई प्रमाण नहीं है और इस प्रकार स्टॉक में बृद्धि करने की आवश्यकता से कोई हानि हुई। इसके आगे घेरलू उत्पादकों द्वारा बिक्री में कमी के कोई प्रमाण नहीं है। मूल्यों में कमी के संबंध में इस बात का उल्लेख किया जाता है कि भारतीय उत्पादकों को 1997-98 में मूल्यों में कमी को नहीं झेला और जॉच के तहत आयात से कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इस बात का भी उल्लेख किया जाता है कि अधिक मात्रा में अन्य देशों से जो आयात किया गया है उसका मूल्य जॉच अधीन आयात के मूल्य से कम में किया है। संबद्ध आयात का औसत मूल्य जापान, पुर्तगाल, स्पेन, इटली के आयात का अन्यतम औसत मूल्य है। इस

प्रकार, भारतीय उत्पादकों पर यदि मूल्यों में गिरावट का कोई असर होता है तो जापान, पुर्तगाल, स्पेन और इटली से आयात के मूल्यों की बजाह से नहीं है और इस संबंध में भारतीय उद्योग को कोई हानि और इन आयातों में कोई अनियमित संबंध नहीं है। आगे यह उल्लेख किया जाता है कि अन्य तथ्य जो तथाकथित डम्प आयात के अलावा हैं जो भारतीय उत्पादकों की हानि का कारण है वह विश्व बाजार में एक्रीलिक फाइबर के मूल्यों में गिरावट जो 1995 के दूसरे छ: महीने में और 1996 के पहले छ: महीनों में आई थी और एशिया में 1995-96 और 1996-97 के दौरान 17 प्रतिशत की गिरावट आई और भारतीय उत्पादकों के मूल्य में केवल 10.5 प्रतिशत की गिरावट आई जो भारतीय उत्पादकों की अच्छी सुरक्षा को दर्शाता है। इस बात का भी उल्लेख किया जाता है कि भारतीय एक्रीलिक फाइबर उद्योग छोटी उत्पादन इकाईयों द्वारा अभिलक्षित होता है। उनमें बहुत से पुराने संयंत्र हैं जो बहुत साल पहले प्रयुक्त आयातित किए गए थे जो विकसित तकनीकी लाभ उठाने में अक्षम हैं।

उत्पादों को आधुनिक उत्पादन में आर्थिक मानदण्डों और आधुनिकतम तकनीक का लाभ लिया जा सकता है। इस कारण, भारतीय संयंत्रों में उत्पादन लागत अधिक है और उत्पादक उत्पादों की पूरी श्रेणी की आपूर्ति करने में सक्षम नहीं हैं।

घ. उठाए गए मामलों की जॉच

4. निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ताओं और अन्य संबद्ध पार्टीयों द्वारा प्रस्तुत किये गए दस्तावेजों की जॉच की गई है और विचार किया गया और इन जॉचों में पाया कि वे उपयुक्त स्थानों पर थे।

ड. विचारार्थ उत्पाद

5. जिस उत्पाद की चर्चा है वह एक्रीलिक फाइबर है जो संकुचित और गैर-संकुचित रूप में है जिसकी रेंज 1.5 डेनियर से 8.0 डेनियर है और जिसको कस्टम टैरिफ 1975 के अन्तर्गत कस्टम कोड 5501.30 और 5503.30 के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया है। तथापि वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और किसी भी रूप में वर्तमान जॉच के दायरे में बाध्य नहीं है। एक्रीलिक फाइबर ऊन का सस्ता प्रतिस्थापन है जो बहुत महँगा है, एक्रीलिक फाइबर का या तो बेट टेकनालाजी या ड्राई टेकनालाजी के माध्यम से उत्पादन किया जाता है। एक्रीलिक फाइबर का उपयोग दैनिक जीवन के उपयोग आने वाले जैसे-बस्त्रों घेरलू उपयोगों और कुछ उद्योगों में होता है।

च. समान वस्तुएं

6. एक्रीलिक फाइबर का उत्पादन विभिन्न विशिष्टताओं में बेचा जाता है। तथापि विभिन्न विशिष्टताएँ फाइबर के रूपों को दर्शाता है और जिससे उसका उपयोग भिन्न-भिन्न रूपों में किया जा सकता है। यह भी देखा गया है कि विभिन्न किस्मों की बाजार पद्धति भी बही है। अतः यह माना जाता है कि घेरलू उद्योग में उत्पादित और बिक्री किए जाने वाले एक्रीलिक फाइबर जापान, पुर्तगाल, स्पेन और इटली से आयातित एक्रीलिक फाइबर से बहुत मिलता-जुलता होता है। इनको रूल्स सुप्रा की परिभाषा के तहत समान वस्तुओं में लाया गया है।

छ. घरेलू उद्योग

7. यह याचिका मै. इंडियन एक्रीलिक लि., बण्डीगढ़, पश्चिम एक्रिलोन लि., नई दिल्ली, जे. के. सिंथेटिक्स लि., नई दिल्ली, और कंसोलिडेटेड फाइबर एण्ड केमिकल्स लि., कलकत्ता ने संयुक्त रूप से दायर की है। याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि इंडियन पेट्रोकेमिकल्स लि. जिनका बड़ोदरा में संयंत्र है, एक्रीलिक फाइबर का उत्पादन करने वाली अन्य कम्पनी है। इस प्रकार यह दावा किया गया है कि ये पांच इकाइयाँ हैं जिनकी एक्रीलिक फाइबर के उत्पादन की संयुक्त उत्पादन क्षमता 1,000 मी. टन है। 1996-97 में एक्रीलिक फाइबर का कुल उत्पादन 79,000 मी. टन दर्शाया गया है और याचिकाकर्ता कम्पनियों का उत्पादन 61,187 मी. टन है। इस याचिका में “फॉरम ऑफ एक्रीलिक फाइबर मैन्यूफैक्चरर्स” का समर्थन हासिल है और सभी पांचों कम्पनियों एक्रीलिक फाइबर निर्माताओं के फॉरम के सदस्य हैं। इस प्रकार याचिकाकर्ता घरेलू उत्पादन का 25 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन करते हैं। अतः नियमों के अन्तर्गत घरेलू उद्योग की तरफ से याचिका दायर करने का अधिकार है।

ज. डम्पिंग

8. धारा १४ (१)(ग) के अन्तर्गत वस्तु संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :

- (i) व्यापार के सामान्य प्रवाह में उसी वस्तु के लिए तुलनात्मक मूल्य जब इसका उपभोग नियंतक देश संघ क्षेत्र में हो जैसाकि उपधारा (6) के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार निर्धारित किया गया है।
- (ii) नियंतक देश या संघ क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के प्रवाह में समान वस्तु की जब कोई बिक्री न हो तो ऐसी बिक्री में पर्याप्त तुलना नहीं हो सकती, इसमें समान मूल्य लागू होगा :

 - (a) समान वस्तु के तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य जब नियंतक देश या संघ क्षेत्र या किसी उचित विकासशील देश से नियंत होता है जैसाकि उपधारा (6) के अन्तर्गत नियमों के अनुसार, निर्धारित होता है; या
 - (b) लाभ के लिए और प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागत के लिए उपयुक्त वृद्धि के साथ मूल देश में उक्त समान के उत्पादन की लागत उपधारा (6) के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार आती है; या

बशर्ते कि मूल देश के अतिरिक्त अन्य देश से वस्तु के आयात के मामले में और नियंतक देश के माध्यम से सामान भेजा गया है, या नियंतक देश में ऐसे समान का उत्पादन न हुआ हो या नियंतक देश में तुलनात्मक मूल्य न हो तो मूल देश में इसके मूल्य के संदर्भ में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जाएगा।

9. प्राधिकारी ने उपरोक्त धारा के अनुसार विषयोक्त देशों के नियंतकों को प्रश्नावलियाँ भेजी। सामान्य मूल्य और नियंत मूल्य के संबंध में नियंतकों के दावे नीचे दिये गए हैं :

10. नियंतकों के दावे

देश—जापान के नियंतकों के दावे

(1) नियंतकों ने दावा किया है कि उन्होंने जो उत्पाद भेजा है वह एक्रीलिक स्टेपल फाइबर “एक्सलेन ब्रांड” है और उसका उत्पादक “टो कं. लि.” था। इस बात का उल्लेख किया जाता है कि जॉन अवधि के दौरान उन्होंने *** कि. ग्रा. इस ब्रांड का नियंत किया। यह दावा किया है कि “एक्सलेन” ब्रांड एक्रीलिक फाइबर हाई पाइल निटिंग उद्योगों के लिए पर्याप्त है और ये सभी उत्पाद विशिष्ट फाइबर हैं। ये फाइबर फ्लेट क्रास सेक्सन हैं और इस तरह के फाइबर का भारत में उत्पादन नहीं होता। यह भी दावा किया गया है कि यह विशिष्ट एक्रीलिक स्टेपल फाइबर कमांड है और जिसका सामान्य एक्रीलिक स्टेपल फाइबर की तुलना में बहुत अधिक बिक्री मूल्य है। यह सिद्ध होता है कि यह एक विशिष्ट पदार्थ है। उनके द्वारा नियंत किए गए सभी उत्पाद 10 डेनियर में थे अर्थात् कोर्सट डेनियर प्राधिकरण इस मामले में ही जॉन अवधि कर रही है। यह भी उल्लेख किया गया है कि उस अवधि के दौरान उन्होंने केवल *** कि. ग्रा. 5 डेनियर फाइबर का नियंत किया और यह भी एक विशेष प्रकार का फाइबर है जो फ्लेट क्रास सेक्सन है। इसी पर आधारित उन्होंने बताया कि नियंतकों के लिए प्रश्नावली का उत्तर देना उनके लिए आवश्यक नहीं है।

उन्होंने यह भी दावा किया कि उन्होंने सभी प्रकार के एक्रीलिक स्टेपल फाइबर का “केनकारन” ब्रांड का नियंत किया जिसका नियंत “कनेका कारपोरेशन” है। यह उत्तरेष्ट किया गया कि उन्होंने इस ब्रांड का **** कि. ग्रा. नियंत किया। यह भी दावा किया गया है कि “केनकारन” ब्रांड एक्रीलिक फाइबर जॉन अवधि का उद्योग नहीं है और नीचे दिये गये कारणों से इसकी जॉन से अलग करना चाहिए;

- (i) “केनकारन” ब्रांड मॉड एक्रीलिक फाइबर में एक्रिलोलिट्रायल और पोलीविनायल क्लोरोइड मिला है जिसका प्रतिशत 50-50 प्रतिशत है। अर्थात् संबंधित फाइबर में एक्रिलोनिट्रायल की मात्रा 85 प्रतिशत से कम है।
- (ii) मॉड एक्रीलिक स्टेपल का पूर्वा रूप से भारत में उत्पादन नहीं होता अतः इससे कोई हानि नहीं है।

उन्होंने भारत को नियंत के कुछ बीजक प्रस्तुत किए। उन्होंने ऊपर बताए गए कारणों से विनियम प्रपत्र में उत्तर नहीं दिया और बता दिया उनके विरुद्ध एंटी डम्पिंग के विकापण का कोई मामला नहीं बनता।

ख. कोमात्सुया कारपोरेशन

निर्यातक ने दावा किया कि न तो वे कभी एक्रीलिक फाइबर के उत्पादक रहे हैं और न ही व्यापारी रहे हैं। यह उल्लेख किया गया कि उन्होंने किसी प्रकार के मामलों की ग्रटकों को आपूर्ति की थी और सिंथेटिक फाइबर को उनका कोई सेना-देना नहीं है और न ही उन्होंने एक्रीलिक फाइबर का कभी निर्यात किया है।

ग. ईटोचु कारपोरेशन

निर्यातक ने बताया कि जाँच अवधि के दौरान उन्होंने एक्रीलिक फाइबर की भारत को बिक्री नहीं की अतः उन्होंने खेद प्रकट किया कि वे अपेक्षित विवरण के साथ जाँच में सहयोग नहीं कर सके।

घ. मित्सुबिसी कारपोरेशन

उन्होंने बताया कि जाँच अवधि दौरान उन्होंने भारत को एक्रीलिक फाइबर का कोई निर्यात नहीं किया अतः उन्होंने अनुरोध किया कि उनकी कम्पनी को जाँच प्रक्रिया से अलग रखा जाए।

कु केनका कारपोरेशन/मित्सु एंड कं.

उन्होंने बताया कि जाँच अवधि के दौरान उन्होंने मित्सु एंड कं. लि. और केनकारण कारपोरेशन के आयातित सं केनकारण ब्रांड मॉड एक्रीलिक स्टेपल फाइबर प्रेटेक्स ब्रांड मॉड एक्रीलिक स्टेपल फाइबर का भारत को निर्यात किया, जिसका विवरण क्रमशः मित्सु एंड कं. लि. और कानुमित्सु कारपोरेशन लि. उपलब्ध कराएगे। यह भी उल्लेख किया गया कि घरेलू उद्योग की तरफ से दायर याचिका में उल्लेख उत्पाद के विवरण को निर्यात किया माल पर्याप्त नहीं है। केनका कारपोरेशन केवल मॉड एक्रीलिक फाइबर का उत्पादन करता है जिसमें वजन के हिसाब से 50 प्रतिशत एक्रीलोनिरिल इकाई हैं। जाँच के अधीन उत्पाद एक्रीलिक फाइबर है जो सिंथेटिक पोलीमर की लम्बी श्रेणी है जिसमें एक्रीलोनिट्रिय इकाईयों का वजन के हिसाब से कम संचय 85 प्रतिशत मिला हुआ है। भारत में मॉड एक्रीलिक फाइबर का कोई भी उत्पाद नहीं है। घरेलू उत्पादन और क्षमता की तुलना में आयात की मात्रा नगण्य है, अतः घरेलू उद्योगों के हितों को कोई नुकसान नहीं है।

उन्होंने उपरोक्त भी देखते हुए मार्केट में माँगी गई सूचना नहीं भेजी है और सूचित किया कि प्रथम दृष्ट्या इस उत्पाद के संबंध में उनके उत्पाद पर एंटी-डम्पिंग इश्यूरी विरूपण कोई मामला नहीं बनता, परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति कथित डम्पिंग का मार्जिन है।

निचीमेन कारपोरेशन

उन्होंने बताया कि एक व्यापारिक कम्पनी है और मेकर्स एफ ओ बी की शर्तों के अन्तर्गत एक्रीलिक फाइबर खरीदार सी आई एक मुम्बई की शर्तों के अधीन उनके विक्रेता को निर्यात किया है।

इस प्रकार एफ ओ बी से पूर्व सभी चार्जों और मुम्बई पोर्ट पर उनके कार्यों के आगमन के पश्चात् सभी चार्जों की उन्हें जानकारी नहीं है। एक ओ बी पूर्व चार्जों के संबंध में बताया गया कि उत्पादक मित्सुबिसि रेयन कं. लि. अपने काउंसल के माध्यम से उत्तर देंगे। घरेलू मूल्यों के संबंध में यह बताया गया कि उनके पास घरेलू बाजार में एक प्रकार के संक्रेतिक फाइबर की बिक्री का कोई रिकार्ड नहीं है। चूंकि वे व्यापारी हैं,

उन्होंने “उत्पादन लागत” के बारे में जानकारी देने में अपनी असमर्थता जाहिर की।

जाँच के दौरान उन्होंने भारत को निर्यात की एक खेप भेजी। तथापि की गई सूचना के अनुसार निर्यात लेन-देन के लिए एक्स-फैक्टरी स्तर पर मूल्यों को “अनजान” दर्शाया है और कुछ मूल्य समाचोजन के बारे में उन्होंने आवेदन 3 ए में “अनजान” अंकित किया है। इस प्रकार भेजी गई सूचना से न तो निर्यात मूल्य और न ही सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जा सकता है।

छ. असाही केमिकल इंडस्ट्रीज लि. और सुमिकीन बुसान कारपोरेशन लि. ओसाका

यह दावा किया है कि भारत को असाही सुमिकिन के माध्यम से निर्यात किया जो जापान में एक बड़ा व्यापारिक संस्थान है। असाही ने सुमिकिन को 30 दिन के क्रेडिट पर ऑन प्रिंसिपल टू प्रिंसिपल आधार पर फाइबर बेचा। सुमिकिन को सामान के लिए मूल्य और व्याज चुकाया। सुमिकिन भारतीय आयातक को सी. आई. एफ. मूल्य के आधार पर भारतीय आयातक को एक्रीलिक फाइबर बेचा।

उन्होंने दो भागों में ग्रेड वार मूल्य संरचना प्रस्तुत की। भाग ए में सुनिश्चित की खरीद के समय से सी आई एफ आधार पर सामान बेचने तक की मूल्य की संरचना दी गई है और भाग ब में सुमिकिन को फाइबर बेचने में की मूल्य संरचना दी गई है।

सुमिकिन ने असाही से खरीद मूल्य तय करने के लिए विदेशी भाग, विदेशी बीजा, भारतीय एंजेंट कमिशन, बैंक चार्ज और कमीशन के लिए कटौती के लिए दावा किया है। मैं असाही ने निर्यात मूल्य को एक्स-फैक्टरी स्तर पर लाने के लिए अंतर्राज्यीय भाड़ा, बीजा, स्टोरेज, बिक्री व सामान्य प्रशासनिक खर्चों में कटौती के लिए दावा किया है। उन्होंने प्राप्त व्याज के कारण क्रेडिट दिया है।

एक्स-फैक्ट्री स्तर पर घरेलू मूल्यों की गणना करते समय, उन्होंने घट पैकिंग (लेबल चार्ज, अन्तरराज्यीय भाड़ा, जिसमें बीजा शामिल है जो ट्रेकिंग कम्पनी वहन करेगी), स्टोरेज, बिक्री और सामान्य प्रशासनिक खर्चों के कारण मूल समायोजन का दावा किया है। यह भी दावा किया गया है कि न तो असाही और न ही सुमिकिन ने जापान सरकार से एक्रीलिक फाइबर निर्यात बिक्री के लिए कोई प्रोत्साहन किया है।

ज. मित्सुबिसी रेयन कं. लि. (एम आर सी)

यह दावा किया गया है कि 1993 से वे रेयन स्टेपल के उत्पादक हैं। यह दावा किया गया है कि जाँच अवधि के दौरान एम आर सी ने भारत को जो पांच में से तीन प्रकार के एक्रीलिक फाइबर निर्यात किए हैं, वे विशिष्ट प्रकार के हैं। और वर्तमान जाँच से इनको अलग होना चाहिए। ये हैं : वी 86-मोहर टाईप, वी 85-सुपर सिंकेबल टाईप और एच 925-पेटेन्ट टेक्नोलॉजी फाइबर। यह दावा किया गया कि वी 86-मोहर टाईप भारतीय उद्योग में उत्पादित फाइबर से निर्माण प्रक्रिया तकनीक, संयंत्र और उपकरण, औतिक विशिष्टताओं, तकनीकी विशेषताओं, उपयोग मूल्य, उपभोक्ता अवधारण, लोक अवधारणा इत्यादि के रूप में भिन्न है। वी 86-में उड़ाली चमक है। यह दावा किया गया कि वी 85-फाइबर का अन्तिम उत्पाद को उचित रूप में एक ही रंग में ताने के लिए वी 86-के साथ संयोजन किया जाता है। एच 525 एक अद्वितीय उत्पाद है जिसकी तकनीक भारत को किए गए निर्यात एक्रीलिक फाइबर से भिन्न है।

इसके आने पर स्वीकार किया गया कि एम आई सी जापानी और विदेशी बाजार की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। एम आर सी विदेशी बाजारों में सामान सीधे नहीं बेचता अपितु व्यापारियों के माध्यम से बेचता है। भारत के मामले में प्राथमिक रूप से मारुबेनी कारपोरेशन के माध्यम से सामान का नियात किया गया। इस प्रकार, यह दावा किया गया है कि एम आर सी को बात की कोई जानकारी नहीं है कि मारुबेनी ने विदेशी भाड़े, समुद्री बीमा, इत्यादि पर कितना खर्च किया। यह भी अनुरोध किया गया कि वी ९७ी और उपरोक्त के एक्रीलिक फाइबर और टो और टॉप भी इससे किया जाना चाहिए। यह भी अनुरोध किया गया है कि जापान की अर्थ-व्यवस्था उच्च लागत की है और जापान के ग्राहक सेवा लागत बहुत अधिक है।

उन्होंने भारत के नियात मूल्य में एक्स-फैक्ट्री स्तर पर पहुंचने के लिए विविध खर्चों, स्थायी खर्चों और अप्रत्यक्ष खर्चों के कारण मूल्य समायोजन का दावा किया। इसी प्रकार घरेलू मूल्य से घरेलू बाजार बिक्रीयों में एक्स-फैक्ट्री स्तर के मूल्य को लाने के सिए कटौती/मूल्य समायोजन का दावा किया गया है। यह भी प्रस्तुत किया गया है कि आवेदन ३४ में निर्दिष्ट सूची मूल्य छूट/कटौती और सामान की खेप में कम्पनी द्वारा किए गए सभी प्रत्यक्ष खर्चों जैसे अन्तर्राज्यीय भाड़ा का निरल बिक्री मूल्य है। इसी प्रकार आलेख उख के संबंध में दर्शाई गई ग्राहकों को छूट/कटौती की निवल बिक्री एच ३२५ को छोड़कर उच्चतर बोल्यूम और सामान की खेप में कम्पनी द्वारा किए गए सभी प्रकल्प खर्चों जैसे अन्तर्राज्यीय भाड़े को नियंत्रित करती है। नियातक ने आगे बताया कि उन्होंने घरेलू बाजार में निवल बिक्री मूल्य में से *** येन प्रति कि. ग्रा. के समायोजन के लिए दावा किया है। यह दो बाजारों में कम्पनी द्वारा किए गए खर्चों में अन्तर के आधार पर है।

झ. मारुबेनी कारपोरेशन

नियातक ने दावा किया है कि वे एक व्यापारिक निगम हैं और मिस्युबिसि और टोयोबो ने मनोनीत प्राधिकरण के समक्ष उत्तर देने का सुझाव दिया है। यह उल्लेख किया गया कि उन्होंने भारत को एक्रीलिक फाइबर का नियात किया। एक्रीलिक फाइबर टोयोबो से एफ ओ बी आधार पर खरीदा गया और एफ ओ बी सभी खर्चों व सामान बहन की उत्पादन कम्पनी को दिया। वे प्राथमिकतः भारतीय ग्राहकों को सी आई एफ आधार पर बेचते हैं। इसके आगे बताया गया कि कम्पनी द्वारा विदेशी भाड़ा, समुद्री बीमा, इत्यादि पर किए गए खर्चों का विवरण मारुबेनी को भेजा जाता है ताकि उत्तर को पूरा करने के लिए मिस्युबिसि और टोयोबो का सहयोग रहे। यह भी बताया गया कि सूचिक वे घरेलू बाजार में बेच रहे हैं, वे उत्पादन नहीं हैं और केवल व्यापारी हैं अतः घरेलू बिक्री के संबंध में सूचना नहीं भेज रहे हैं जैसाकि मनोनीत प्राधिकरण व्यापारियों का निर्धारण/मूल्यांकन नहीं करता। उन्होंने आयातकार विवरण प्रस्तुत किया जिसमें बीजक सं. और तिथि, करार सं. और तिथि, बिल आफ स्लेंडिंग सं. और तिथि, विशिष्टीकरण, मात्रा, बीजक मूल्य, खरीद बिल इत्यादि का विवरण दिया गया है। यह मिस्युबिसि या टोयोबो द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

तथापि उन्होंने अपने दावे के समर्थन में कोई बीजक या प्रश्नपत्र प्रस्तुत नहीं किया।

टोयोबो कम्पनी लिमिटेड

उनके द्वारा यह बताया गया कि वे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जापान एक्सक्टैल कम्पनी यह एक्रीलिक का उत्पाद करती है तथा एकमात्र

टोपनो को बेचती है के ८० प्रतिशत हिस्से का स्वामी है। इसके बदले टोयोबो एक्सक्टैल नामक ब्रांड के नाम से बेचती है। अतः टोयोबो ने एक्सक्टैल के समक्ष एक समेकित उत्तर प्रस्तुत किया है। यह भी बताया गया है कि जांच वर्ष के दौरान केवल मारुबेनी कारपोरेशन के माध्यम से ही नियात किया गया। कुछ विशेष प्रकार के रेशे (उच्चतर डेनियर एवं तथा सपाट/सैक्षण रेशे का) कैनमातसू के माध्यम से नियात किया गया।

इसके अतिरिक्त टोयोबो घरेलू बाजार में उपभोक्ताओं को सीधे अथवा कई जापानी व्यापारिक प्रतिष्ठानों के माध्यम से भी बिक्री करता है।

यह भी दावा किया गया है कि चूंकि कम्पनी भारत को सीधे वस्तुओं का नियात नहीं करती, मारुबेनी द्वारा विदेशी भाड़े, समुद्री बीमा आदि पर किये गये खर्चों की सूचना उपलब्ध नहीं है। यह बताया गया है कि उन्होंने माल को संयुक्त प्रकार के (३.० डी. तथा २.५ डी.), नियातित प्रकार के (१.४ डी., २.० डी. तथा ३.० डी.) तथा विशेष प्रकार के (४.५ डी., १.० डी. तथा १३ डी.) रेशे का निर्माण किया।

देश—स्पेन

(क) मोन्टे फाइबर हिस्पेनिया एस. ए. स्पेन

नियातक द्वारा यह बताया गया है कि वे स्पेन में एक्रीलिक फाइबर के उत्पादक हैं। यह भी बताया गया है कि जांच वर्ष में उनकी कम्पनी ने भारत को एक्रीलिक फाइबर का नियात नहीं किया है। अतः उनकी तरफ से कोई क्षेपण नहीं है उन्होंने यह निवेदन किया है कि कम्पनी आधार के बजाय देश के आधार पर कोई कार्यवाही करने की स्थिति में उन्हें इस कार्यवाही से अलग रखा जाए।

(ख) कोर्टल्डस एस्पेना एस. ए. स्पेन

यह दावा किया गया है कि उन्होंने न तो कोई सहायता प्राप्त हुई और न ही उन्हें नियात बिक्री पर तथा कच्चे माल के आधार पर कोई प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे भारत को एक्रीलिक फाइबर की श्रेणियां नियात कर रहे हैं जिनके नाम स्टेपल १.७ डी. टी. ई. एक्स., २.२ डी. टी. एक्स., २.५ डी. टी. ई. एक्स. तथा ३.३ डी. टी. ई. एक्स. हैं। उन्होंने उपरोक्त श्रेणियों की भारत को नियात तथा अन्य देशों को घरेलू बिक्री तथा नियात की जानकारी प्रस्तुत की है।

भारत को नियात मूल्य के लिये एक्स फैक्ट्री की गणना करते समय उन्होंने कमीशन/छूट, उधार लागत, अन्तर्राज्यीय भाड़े परिचालन, विदेशी भाड़े तथा बीमा के लिये मूल्य समायोजन का दावा प्रस्तुत किया है। उन्होंने घरेलू लागत मूल्य की गणना के लिये शीघ्र भुगतान पर छूट, उधार लागत, अन्तर्राज्यीय भाड़ा के लिये मूल्य समायोजन का दावा प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह भी दावा किया है कि वे भारत को नियात बिक्री पर वहन कर रहे हैं घाटा तथा घरेलू बिक्री पर लाभ कमा रहे हैं। परन्तु वे २.५ डी. टी. ई. एक्स. की घरेलू बिक्री पर लाभ नहीं कमा रहे हैं। नियातक ने यह भी दावा किया है कि वे सूची गत कीमतों को नहीं अपनाते। प्रत्येक ग्राहक द्वारा व्यक्तिगत कीमतों का निर्धारण किया जाता है। यह भी दावा किया

गया है कि आपत्तौर से सुचारू तकनीकी सहायता, बिक्री पश्चात् सेवा तत्त्वर एवं अधिक लंबाली सुपुर्दगी के आधार पर घरेलू आजार में अधिक कीमत वसूली जा सकती है। आगे यह बताया गया है कि भारतीय आजार में कम कीमत से उनकी इच्छा का पता लगता है कि कुछेक प्रमुख ग्राहकों पर ध्यान केन्द्रित कर आजार में उपस्थित दर्ज कराई जाए। उन्होंने निर्यात वस्तुओं तथा घरेलू वस्तुओं के अलग-अलग मूल्यों का दावा इस धारणा पर किया है कि उनके पर की गई ए. सी. एन. खरीददारी नियमित घरेलू आजार के लिये है तथा मौके पर की गई खरीददारी निर्यात व्यापार के लिए है।

देश—ईटली

मोन्टेफाइब्रर एस. पी. ए. इटली

उनका दावा है कि भारत सरकार द्वारा निर्यात बिक्री पर कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है। यह बताया गया है कि उनकी सम्पूर्ण बिक्री सी. आई. एफ. भारतीय बंदरगाह आधार पर होती है। भारत को निर्यात बिक्री मूल्य के लिये एक्स-फैक्ट्री आधार की गणना हेतु उन्होंने कमीशन, अन्तर्देशीय परिवहन, विदेशी परिवहन तथा बीमा के लिये मूल्य समायोजन का दावा प्रस्तुत किया है। घरेलू कीमत की गणना करते हुए उन्होंने भुगतान तथा माल पर छूट, परिवहन लागत प्रोत्साहन-विज्ञापन-आर. एण्ड. एस.-तकनीकी सेवाओं की लागत, स्टॉक (गोदाम एवं वित्त प्रबंध) के लिये मूल्य समायोजन का दावा प्रस्तुत किया है। उन्होंने ग्रेड/डेनियर पर मूल्य ढांचा प्रस्तुत नहीं किया है। प्रोत्साहन-विज्ञापन-आर. एण्ड. एस. तकनीकी सेवा लागत के बारे में यह बताया गया है कि ये लागत घरेलू बिक्री पर तथा यूरोपीय समुदाय के देशों को बिक्री पर आवंटित की जाती है तथा भारत को उससे छूट है। स्टॉक (गोदाम तथा वित्त प्रबंध) शुल्कों के बारे में यह बताया गया है कि ये लागत केवल घरेलू आजार में बिक्री पर वसूल की जाती है तथा भारत को बिक्री केवल उत्पादन लागत पर होती है।

भारत को निर्यात के लिये एक्स-फैक्ट्री आधार पर दावा की गई कीमत अमरीकी डालर प्रति *** किलोग्राम है तथा घरेलू बिक्री के लिए यह अमरीकी *** डालर है।

देश—पुर्तगाल

नियांसिक : फाइब्रर सिंथेटिकास डी पुर्तगाल एस. ए., पुर्तगाल

ऐसा प्रतीत होता है कि वे एक्रिलिक फाइब्रर की तीन श्रेणियां जिनके नाम डेनियर 2.2, डेनियर 3.3 तथा डेनियर 5.6 हैं, का निर्यात कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे अन्य देशों को बिक्री नहीं करते। भारत को निर्यात मुख्य रूप से गणना करने के लिये उन्होंने छूट, अन्तर्देशीय भाड़ा, विदेशी भाड़ा, विदेशी नौकावहन शुल्कों के लिये मूल्य समायोजन का दावा प्रस्तुत किया है। घरेलू मूल्य की गणना के लिये उन्होंने छूट, अन्तर्देशीय भाड़ा, भण्डारण, उधार पर लागत के लिये मूल्य समायोजन प्रस्तुत किया है।

यह भी दावा किया गया है कि ग्राहकों को कोई वित्तीय सहायता प्रदान नहीं की गई है। भारत को निर्यात के लिये कोई विशेष मूल्य सूची नहीं है तथा प्रत्येक ग्राहक के साथ कीमत व्यक्तिगत रूप से निर्धारित की जाती है। इसके अलावा भारतीय ग्राहक के पास कोई मामला नहीं है जिससे माल के वास्तविक निर्यात मूल्य पर असर पड़ता हो तथा कीमतें साइट पर भुगतान आधार पर हों। उन्होंने निर्यात बिक्री तथा घरेलू बिक्री के संबंध में

नमूने के बीजक प्रस्तुत किये हैं।

ज. प्राधिकारी द्वारा निर्यातिकों के दावों की जांच

प्राधिकारी के पास उपलब्ध तथ्यों पर यह कहा जा सकता है कि एक्रिलिक फाइब्रर के विभिन्न डेनियर में लागत अथवा मूल्यों की दृष्टि से कोई अधिक अन्तर नहीं है। इसके अलावा विभिन्न किस्म आपस में काफी मात्रा में बदले जा सकते हैं। अतः प्राधिकारी ने इन जांचों के लिये सभी रेशों (विचाराधीन उत्पाद) को इकट्ठा कर दिया है।

डम्पिंग मार्जिन

आसाही केमिकल्स इन्डस्ट्रीज लिमिटेड

सामान्य मूल्य

(क) सामान्य मूल्य व्यापारिक प्रतिष्ठानों की बजनी औसत बिक्री पर आधारित होता है। बीजक, पैकिंग अन्तर्देशीय भाड़े पर तथा विशेष बाजारों पर किये गए रकमों के लिये समायोजन की अनुमति है। प्राधिकारी कुल व्यापार तथा अन्तिम उपयोग के आधार पर किये गये छूट के दावे को स्वीकार नहीं करते क्योंकि इस प्रकार की छूट/रिबेट की स्थितियों का मूल्य निर्णय के समय पता नहीं लगाया जा सकता। कम्पनी द्वारा रखी गई इन्वेन्ट्री के आधार पर भण्डारण लागत के समायोजन के दावे को भी स्वीकार नहीं किया जा सकता।

निर्यात मूल्य

(1) कम्पनी ने विषय वस्तुओं का निर्यात सुमिकेन बूसान के भाध्यम से किया है। जिन्होंने आवश्यक सूचना भी प्रस्तुत की है तथा इसको सत्यापन किया जा चुका है। नियात मूल्य का निर्धारण सुमिकेन द्वारा भारतीय क्रेताओं को बेचे गए माल के आधार पर किया गया है। एक्स-फैक्ट्री नियांत मूल्य का निर्धारण करते समय निर्यात बिक्री के लिये विदेशी भाड़े तथा बीमा, बंक शुल्क, भारतीय एजेंट को कमीशन, अन्तर्देशीय भाड़ा तथा निर्यात बिक्री के लिए समायोजन किया गया है। आसाई ने माल के लागत पर दिये गये खर्चें, उसको चिन्हित करने, कस्टम से छूटाने, लेखन तथा अवलोकन पर किये गए खर्चों के लिये भण्डारण शीर्ष के अन्तर्गत दावा प्रस्तुत किया है। यद्यपि भण्डारण लागत के रूपों में खर्चों का दावा किया गया है, यह कम्पनी द्वारा माल के निर्यात पर खर्च है अतः विक्रय मूल्य से इसे निकाल दिया गया है। इसके अतिरिक्त आसाही ने सिमीकेन को उधार पर माल बेचा है तथा उधार विक्री के लिए व्याज वसूल किया है। आसाही की यह आय होने के कारण इसे विक्रय मूल्यों में शामिल किया गया है।

उपयुक्त के अनुसार, सामान्य मूल्य (एक्स फैक्ट्री बेसिस) प्रति कि.ग्रा. *** अमेरिकी डालर तथा निर्यात मूल्य (एक्स-फैक्ट्री बेसिस) प्रति कि.ग्रा. *** अमेरिकी डालर निर्धारित किया जाता है। इस प्रकार डम्पिंग मार्जन अमेरिकी डालर *** प्रति कि.ग्रा. है जो कि निर्यात मूल्य का 24.36% है।

टॉयटो कं.

सामान्य मूल्य

बिक्री मूल्य घरेलू बाजार के बजानी औसत बिक्री मूल्य पर आधारित रहा है। कम्पनी ने घरेलू बाजार तथा इसकी आय की तालिका के अनुसार भारत की किए गए निर्यात में आए खर्चों की भिन्नता के लिए समायोजन का दावा किया है। तथापि, यह पाया गया है कि कम्पनी ने समायोजन का यह दावा विक्रय की गई कुल मात्रा के आधार पर किया है। क्योंकि कम्पनी द्वारा बेची गई बहुत सी वस्तुओं का मूल्य महत्वपूर्ण रूप से अलग-अलग है अतः मूल्य के आधार पर खर्च को स्वीकार कर लिया गया है।

निर्यात मूल्य

कम्पनी ने अधिनस्थ वस्तुओं का मारुबेनी कारपोरेशन के माध्यम से निर्यात किया है। जिसने आवश्यक सभी सूचना प्रस्तुत की है तथा इसकी आवश्यक सीमा तक जांच की गई है। निर्यात मूल्य सी.आई.एफ. मूल्य के आधार पर निर्धारित किया गया है जिस पर कि मारुबेनी द्वारा भारतीय खरीदारों को माल बेचा गया है। मारुबेनी द्वारा समुद्री भाड़ा, बीमा, कमीशन तथा ब्याज पर आए वास्तविक खर्च के आधार पर समायोजन का दावा किया गया है जो कि स्वीकार कर लिया गया है। टॉयटो कं. द्वारा एक्स—फैक्टरी के बाद एफ.ओ.बी. तक दिए गए चार्ज तथा स्थानीय भाड़ा, बीमा, जहाजरानी चार्ज व स्टोरेज आदि पर हुए वास्तविक खर्च तथा मूल्य समायोजन पेश किए गए दावे को किए गए वास्तविक खर्च के आधार पर स्वीकार कर लिया गया है।

उपयोक्ता के अनुसार, सामान्य मूल्य (एक्स—फैक्टरी बेसिस) प्रति कि.ग्रा. *** अमेरिकी डालर तथा निर्यात मूल्य (एक्स—फैक्टरी बेसिस) प्रति कि.ग्रा. *** अमेरिकी डालर निर्धारित किया जाता है। इस प्रकार डम्पिंग मार्जन अमेरिकी डालर *** प्रति कि.ग्रा. है जो कि निर्यात मूल्य का 5.72% है।

मित्रुबिशी रेयान

सामान्य मूल्य

बिक्री मूल्य अधिकतम मात्रा में खरीद करने वाले ग्राहक के लिए लागू मूल्यों के औसत के आधार पर है। तथापि कम्पनी द्वारा यह प्रदर्शित नहीं किया गया है कि विभिन्न ग्राहकों के लिए बिक्री मूल्य मात्रा पर निर्भर करता है। यह भी पता चला है कि इस कम्पनी ने अपनी संबंधित कम्पनियों का फाइबर की बिक्री की है। अतः बिक्री मूल्यों का निर्धारण संबंधित कम्पनियों को की गई बिक्री को घटा कर औसत पर किया गया है।

कम्पनी द्वारा बाजार तथा भारत को किए गए निर्यात में हुए खर्चों में भिन्नता के लिए समायोजन का दावा किया गया है जिसको कि स्वीकार कर लिया गया है।

निर्यात मूल्य

कम्पनी ने मारुबेनी कारपोरेशन के माध्यम से निर्यात किया है जिसने कि आवश्यक सूचनाएं भी प्रस्तुत की हैं जिसकी आवश्यक सीमा तक जांच की गई है।

विदेश भाड़ा, विदेश बीमा, भारतीय एजेंट की कमीशन हेतु एफ.ओ.बी. उपरान्त तथा सी.आई.एफ. तक हुए खर्च के लिए समायोजन के दावे किये गए हैं।

(i) सुमिकन कमिशन : यह वह कमिशन है जो कि मारुबेनी

द्वारा अर्जित की गई है। कम्पनी द्वारा इसकी गणना मित्रुबिशी स्थान द्वारा देखे गए माल के मूल्य तथा मारुबेनी द्वारा उठाए गए सभी खर्चों को ध्यान में रखकर की गई है। इसको स्वीकार किया जा सकता है।

मित्रुबिशी द्वारा एक्स फैक्ट्री के बाद तथा एफ.ओ.बी. तक दिए गए चार्ज एडजस्ट कर दिए गए हैं। उपयोक्ता के आधार पर सामान्य मूल्य (एक्स—फैक्टरी बेसिस) प्रति कि.ग्रा. *** अमेरिकी डालर तथा निर्यात मूल्य (एक्स—फैक्टरी बेसिस) प्रति कि.ग्रा. *** अमेरिकी डालर निर्धारित किया जाता है। इस प्रकार डम्पिंग मार्जन अमेरिकी डालर *** प्रति कि.ग्रा. है जो कि निर्यात मूल्य का 9.8% है।

कोर्टड इस्पेना, स्पेन

सामान्य मूल्य बिक्री मूल्य के तोल औसत पर आधारित हैं। अपने रूप से भुगतान कटौती, ऋण लागत तथा अन्तर्देशीय मंडी के लिए दावा किए गए मूल्य समायोजन को स्वीकार किया जाता है। जांच के दौरान निर्यातक ने भारतीय एजेंट को तोल औसत के समान देय कमीशन की कटौती को स्वीकार किए जाने का अनुरोध किया है। यह अनुरोध रज पृष्ठभूमि पर आधारित है कि भारत में निर्यात एजेंट के माध्यम से किया जाता है जबकि स्पेन में बिक्री के लिए ऐसा नहीं है। तथापि निर्यातक द्वारा प्रमाणन के अभाव में जांच दौर के समय भी प्राधिकारी इस स्थिति में नहीं है कि दोनों को स्वीकार कर सके। 2.5 डिटैक्स के मामले में यह ज्ञात होता है कि घरेलू बाजार में बेच रही है। इसलिए सामान्य मूल्य की गणना करने के लिए दावा किए गए घरेलू मूल्य पर विचार नहीं किया जा सकता। तदानुसार 2.5 डिटैक्स के मूल्य की गणना उत्पन्न लागत पर की जाती है जो कि *** अमेरिकी डालर प्रति कि.ग्रा. है।

निर्यात मूल्य

निर्यात मूल्य और औसत बिक्री मूल्य पर आधारित है। कमीशन/ऋण छूट लागत, अन्तर्देशीय भाड़ा, हैंडकिंग, समुद्री भाड़ा तथा बीमा के लिए समायोजन कर दिया गया है।

उपयुक्त के आधार पर, सामान्य मूल्य (एक्स—फैक्टरी बेसिस) *** अमेरिकी डालर प्रति कि.ग्रा. तथा निर्यात मूल्य (एक्स—फैक्टरी बेसिस) *** अमेरिकी डालर प्रति कि.ग्रा. निर्धारित किया जाता है। इस प्रकार डम्पिंग मार्जन *** अमेरिकी डालर प्रति कि.ग्रा. जो कि निर्यात मूल्य का 38.01% है।

पोर्टफाइर इटली

सामान्य मूल्य

सामान्य मूल्य तोल औसत बिक्री मूल्य आधारित है। उचित भुगतान, गुणवत्ता छूट परिवहन लागत व संबंधन, विज्ञापन, आए.एण्ड.डी., तकनीकी सेवा लागत तथा माल (गोदाम तथा वित्तीय लागत) के लिए समायोजन का दावा किया गया है।

उचित भुगतान तथा गुणवत्ता छूट आंकलन के आधार पर मांगी गई है। दावा किया गया है कि इसमें 1 से 4% तक भिन्नता रहती है तथा इसलिए 2% के औसत के हिसाब से छूट मांगी गई है। * क्योंकि वास्तविक डाटा उपलब्ध नहीं कराया गया था। आंकलन पर किए गए दावे को

स्वीकार नहीं किया जाता है। संबंधित, विज्ञापन, आर.एण्ड.डी. तथा तकनीकी सेवा, लागत के संबंध में यह दावा किया जाता है कि मैं लागत घेरलू बिक्री तथा ई.यू. देशों के लिए है तथा भारत इसमें शामिल नहीं है। यह दावा किया जाता है कि ये आर.एण्ड.डी. प्रोजेक्टस इटनी तथा ई.यू. में बेचे जाने वाले उत्पाद के उद्देश्य भी है। प्राधिकारी को, इन साक्षयों के अभाव में कि इन गतिविधियों का साध्य केवल घेरलू बिक्री तक ही सीमित रहा है, इन खर्चों को स्वीकार करने का औचित्य नहीं जान पड़ता।

कम्पनी द्वारा इन्वैटरी होल्डिंग के आधार पर स्टोक (गोदाम व वित्त) के दावे के संबंध में दावे को स्वीकार नहीं किया जाता है। जांच के दौरान निर्यातक ने अनुरोध किया है कि तौल औसत के समान भारतीय एजेंट को कमीशन के लिए भुगतान की छूट को स्वीकार किया जाए। तथाति, जांच के दौर के समय भी निर्यातक द्वारा प्रमाणन दिए जाने के अभाव में प्राधिकारी इस दावे को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं है।

निर्यात मूल्य

निर्यात मूल्य तौल औसत बिक्री मूल्य पर आधारित है। कमीशन, अन्तर्देशीय परिवहन, विदेश परिवहन तथा बीमा के लिए समायोजन किया जाना स्वीकार किया जाता है।

उपयोक्त के आधार पर सामान्य मूल्य (एक्स—फैक्टरी बेसिस) *** अमेरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. तथा निर्यात मूल्य (एक्स—फैक्टरी बेसिस) *** अमेरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. निर्धारित किया जाता है। इस प्रकार डम्पिंग मार्जिन *** अमेरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. है जो कि निर्यात मूल्य का 24.43% है।

फिसाइल पुर्तगाल

सामान्य मूल्य

सामान्य मूल्य बिक्री मूल्य के तौल औसत पर आधारित है। छूट, अन्तर्देशीय परिवहन, स्टोरेज चार्ज तथा ऋण लागत के लिए समायोजन के दावा स्वीकार किया जाता है। छूट तथा अन्तर्देशीय भाड़े का खर्च उठाए गए खर्च पर आधारित है। अतः स्वीकार किया जाता है। स्टोरेज के संबंध में यह ज्ञात होता है कि स्टोरेज लागत पर समायोजन का दावा कम्पनी की एक्सैस इन्वेट्री के आधार पर किया गया है। यह खर्च स्वीकार नहीं है। ऋण की लागत मोटे तौर पर गिरी गई है तथा *** अमेरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. की दर से स्वीकार की जा सकती है क्योंकि घेरलू बाजार तथा निर्यात बिक्री में भिन्नता रही है। जांच के दौरान कम्पनी ने तकनीकी सदस्यता (अपने घेरलू ग्राहकों को दी गई सदस्यता में उठाया खर्च तथा परिवर्धन खर्चों) के लिए भी समायोजन का दावा किया। इस प्रकार उठाए गए खर्चों को स्वीकार किया जाता है।

निर्यात मूल्य

निर्यात मूल्य और औसत बिक्री मूल्य पर आधारित है। छूट/कमीशन, अन्तर्देशीय भाड़ा, समुद्री बीमा तथा शिपिंग के लिए समायोजन कर दिया गया है।

उपयोक्त के आधार पर सामान्य मूल (एक्स—फैक्टरी बेसिस) *** अमेरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. तथा निर्यात मूल्य (एक्स—फैक्टरी बेसिस) *** अमेरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. निर्धारित किया जाता है। इस प्रकार डम्पिंग मार्जिन *** अमेरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. है जो कि निर्यात मूल्य का 10.85% है।

ट. क्षति

12. नियम II ऊपर, अनुलग्नक-II के अन्तर्गत जब क्षति की स्थिति की पुष्टि हो जाती है तो ऐसी स्थिति में घेरलू उद्योग की क्षति का निवारण भी सम्मिलित है। जिसमें डम्पड आयात की मांगों सहित सभी संबंधित तथ्य, उनका समस्त वस्तुओं के लिए घेरलू बाजार के मूल्यों पर प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घेरलू उत्पादकों पर इस प्रकार के आयात का प्रभाव सम्मिलित है। डम्पड आयात का मूल्य पर प्रभाव देखते हुए यह आवश्यक माना जाता है कि इस बात की परीक्षा को जाए कि क्या समस्त वस्तुओं के भारत में मूल्य की तुलना में डम्पड आयात से महत्वपूर्ण मूल्य हास है या कि इस प्रकार के निर्यात से अन्यथा मूल्य पर एक महत्वपूर्ण सीमा तक प्रभाव पड़ता है या इससे मूल्य बढ़ि पर रोक लगाती है जो कि अन्यथा भी एक महत्वपूर्ण सीमा तक ही गया होता।

नियम II ऊपर के तहत अनुलग्नक-II(iii) में आगे यह प्रावधान है कि जहां किसी एक वस्तु का आयात एक से अधिक देशों से किया जा रहा हो वह साथ-साथ अंटी डम्पिंग अन्वेषण के अन्तर्गत आता है। नामित अधिकारी संख्यी रूप से ऐसे आयात के प्रभाव का मूल्यांकन करेगा। इसके बाद ही यह निर्धारित होता है कि प्रत्येक देश से किए गए आयात के संबंध में डम्पिंग प्रतिस्थापन दो प्रतिशत से अधिक स्पष्ट है क्योंकि निर्यात मूल्य का प्रतिशत तथा प्रत्येक देश से किए गए आयात की मात्रा सनद वस्तुओं के निर्यात का तीन प्रतिशत है अथवा जहां एक अकेले देश से किया गया आयात तीन प्रतिशत: से कम है, वहां समरूपी वस्तुओं का संचयी रूप से आयात सात प्रतिशत से अधिक तथा आयात के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन आयातित वस्तुओं तथा घेरलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों की दृष्टि से उचित है।

प्राधिकारी यह नोट करता है कि अधीनस्थ देश से डम्पिंग की गुंजाइश तथा आयात की मांग ऊपर निर्धारित सीमा से अधिक है। आयात के प्रभावों का संचयी मूल्यांकन उचित है क्योंकि अधीनस्थ देशों के निर्यात मूल्य भारतीय बाजार में घेरलू उद्योग द्वारा प्रभावित मूल्यों से सीधे प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।

भारत में घेरलू उद्योग पर आयात के प्रभाव की परीक्षा करने के लिए प्राधिकारी ने उपयुक्त नियमों को अनुलग्नक-II(iv) के अनुसार उद्योगों की अवस्था पर प्रभाव डालने वाले दूसरे पहलुओं जैसे कि उत्पादन, योग्यता उपयोग, बिक्री मांग, माल, लाभकारिता कुल बिक्री की वसुली, डम्पिंग का महत्व तथा गुंजाइश आदि पर भी विचार किया है।

(क) आयात की मात्रा

एक्रोलिक फाइबर का कुछ आयात 94-95, 95-96 तथा 96-97 के दौरान 8195 मि. टन, 10482 मि. टन तथा 21114 मि.टन रहा। इस प्रकार 94-95 के ऊपर 95-96 में बढ़ि 27.9% थी तथा 95-96 के ऊपर 96-97 में बढ़ि 101% थी। यह बढ़ि 94-95 के ऊपर 96-97 में 158% थी। इस प्रकार अन्वेषण की अवधि के दौरान आयात की मांग महत्वपूर्ण ढंग से बढ़ रही है। कथित देशों से आयात की मांग 94-95, 95-96 तथा 96-97 में 3733 मि. टन, 3396 मि. टन तथा 9548 मि. टन थी। यह देखने में आता है कि कथित देशों के आयात की मांग 94-95 के ऊपर 95-96 में गिरी है परन्तु 96-97 में यह 95-96 के ऊपर 181% बढ़ी। इस प्रकार वर्ष दर वर्ष कथित देशों से आयात में महत्वपूर्ण बढ़ि हुई है। दूसरे

देशों से किए गए आयात की मात्रा 94-95, 95-96 तथा 96-97 में 4462 मि.टन, 7086 मि.टन तथा 11566 मि.टन रही। इन देशों का कुल आयात में हिस्सा 32.40% तथा 45.22% था।

(ख) उत्पादन तथा योग्यता उपयोग

यह भी देखा गया है कि आवेदकों (जैसे कि इण्डियन एक्रीलिक, जे.के., पशुपति एण्ड कान्सोलिडेटिड) की उत्पादन क्षमता तथा उत्पादन इस प्रकार हैं :—

वर्ष	क्षमता (MT)	उत्पादन (MT)	उत्पादन उपयोग
1994-95	60,000	54717	91.2%
1995-96	68,000	48186	70.8%
1996-97	73,000	61187	83.8%

वर्ष दर वर्ष इण्डियन एक्रेलिक्स द्वारा अतिरिक्त क्षमताएं उत्पन्न हो गई। यह भी पता चलता है कि जे.के. सिंथेसीज का क्षमता उपयोग 94-95, 95-96 तथा 96-97 में 66%, 28% तथा 29% रहा। पशुपति कन्सोलिडेटिड तथा इण्डियन एक्रीलिक का क्षमता उपयोग 98%, 103% तथा 107% रहा। इस प्रकार यह पता चलता है कि 95-96 के ऊपर 96-97 में उत्पादन में वृद्धि 27% रही जबकि इस अवधि में स्थापित क्षमता में बढ़ोत्तरी 7.35% थी। यह भी पता चलता है कि जांच के दौरान कुछ निम्न क्षमता उपयोग जे.के. सिंथेसीज द्वारा अत्यधिक निम्न क्रमशः उपयोग के कारण रहा है तथा दूसरी कम्पनियों का क्षमता आयोग 98% से 107% की श्रेणी में रहा।

(ग) बिक्री तथा बाजार प्रतिभागिता

यह पता चलता है कि एक्रीलिक फाइबर की मांग 94-95, 95-96 तथा 96-97 में क्रमशः 83200 मि.ट., 82000 मि.ट. तथा 101000 मि.ट. थी। कुछ मांग में आयात का भाग 94-95, 95-96 तथा 96-97 में क्रमशः 9.80%, 12.8% तथा 21% था। भारतीय उत्पादन का भाग 94-95, 95-96 तथा 96-97 क्रमशः 90.2%, 87.2% तथा 79% था। इस प्रकार इससे यह पता चलता है कि कुछ मांग में आयात की मांग बढ़ रही है तथा कुछ मांग में भारतीय एक्रेलिक का भाग नीचे की ओर रहा है।

(घ) क्लोजिंग स्टॉक

यह पता चला है कि आवेदक का क्लोजिंग स्टॉक 94-95, 95-96 तथा 96-97 में क्रमशः 1255 मि.ट., 381 मि.ट. तथा 2095 मि.ट. था। 95-96 के मुकाबले 96-97 में क्लोजिंग स्टॉक में महत्वपूर्ण ढंग से बढ़ रहा है। यह भी पता चलता है कि कुल 2095 मि.ट. क्लोजिंग स्टॉक में से 1545 मि.ट. क्लोजिंग स्टॉक इण्डियन एक्रेलिक का ही था।

(च) मूल्य कटौती तथा मूल्य मंदी

आवेदक कम्पनियों ने निवेदन किया है कि अधीन देशों से निर्यात भारतीय उत्पादनों द्वारा बेचे जाने वाले फाइबर की कीमतों में काफी गिरावट का कारण रहा है। उपभोक्ता उद्योग भारतीय उद्योग को अधीन देशों से सस्ते निर्यात के नाम पर कीमत कम करने पर जोर डालता है। इसको ध्यान में रखते हुए, डम्पिंग इम्पोर्ट के भय के कारण उन्हें भारी छूट देनी पड़ती है। एक्रेलिक फाइबर के उत्पादन की लागत में वृद्धि भारतीय उद्योग को अपना बिक्री मूल्य बढ़ाने से रोका जा रहा है। ए.सी.एन. कीमतों में वृद्धि के बावजूद भी आवेदकों का औसत बिक्री मूल्य के बहुत ही कम बढ़ पाया है। अधीन देशों से लिए गए डम्पिंग निर्यात से फाइबर के मूल्य पर प्रतिकूल

प्रभाव पड़ा है तथा आवेदकों को भारी हानि हुई है। यह दावा किया जाता है कि 93-94, 94-95, 95-96 तथा 96-97 के दौरान औसत बिक्री मूल्य क्रमशः ***, *** , *** तथा *** था। यह भी प्रतीत होता है कि आवेदक कम्पनियों को 94-95, 95-96 तथा 96-97 में क्रमशः 46 करोड़, 71 करोड़ तथा 54 करोड़ रुपयों की हानि रही। तथापि, यह भी पता चलता है कि विभिन्न उत्पादक विभिन्न बिक्री मूल्य बमूल करते हैं तथा विभिन्न कम्पनियों को होने वाला लाभ/हार्नि भी भिन्न है।

यह भी पता चलता है कि जे.के., पशुपति कन्सोलिडेटिम तथा इण्डियन एक्रेलिक द्वारा वसूल बिक्री मूल्य क्रमशः रु.***, रु.***, रु.*** तथा रु. *** था। इस मूल्य स्तर पर जे.के. को 29.66 करोड़ रुपये का तथा कन्सोलिडेट द्वारा 38.32 करोड़ रुपये की हानि हुई। तथापि अन्वेषण की अवधि के दौरान पशुपति को 2.29 करोड़ रुपये तथा इण्डियन एक्रेलिक को 12.17 करोड़ रुपये मुनाफा हुआ।

(छ) क्षमता का विस्तार

यह निवेदन किया है कि इण्डियन एक्रेलिक का संयंत्र इस ढंग से डिजाइन किया था कि विभिन्न चरणों में क्षमता 12000 मि.ट. से 35000 मि.ट. एक बढ़नी थी। तथापि वित्तीय कठिनाइयों के कारण कम्पनी को यह करना बहुत ही कठिन रहा है।

(ज) धन जुटाने की क्षमता

यह दावा किया जाता है कि अधिकतर आवेदक कम्पनियों को ऋण तथा उस पर व्याज की अदायगी में कठिनाई हो रही है। और तो और, पहले से ही किए गए ऋण की अदायगी में असमर्थता के कारण वे आगे धन जुटाने में समर्थ नहीं हैं। यह उनके विस्तार की भावी योजनाओं पर प्रभाव डालता है। यह भी निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योगों को भारी कैश लोमिस हो रहा है जिससे नैगेटिव कैश फलो हो रहा है। वे अपने निवेश पर उचित रिटर्न भी प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

(झ) क्षति पर निष्कर्ष

13. पिछले अनुछेदों को ध्यान में रखते हुए पता चलता है कि :—

- (क) अधीन देशों से आयात की मात्रा में पूर्ण अर्थों में तथा भारत की उपभोक्ता के अनुसार वृद्धि हुई है।
- (ख) आवेदक कम्पनियों की बाजार भागेदारी नीचे आई है।
- (ग) घरेलू उद्योगों को उचित मूल्य ये भी नीचे के मूल्यों पर बिक्री किए जाने के लिए बाध्य होना पड़ता है जिससे हानि होती है या निवेश पर बहुत ही कम रिटर्न रहता है।
- (घ) आयात द्वारा घरेलू उद्योग की कीमतों में कमी आई है।
- (ङ) घरेलू उद्योग का क्लोजिंग स्टॉक बढ़ा है।
- (च) घरेलू उद्योग अपनी क्षमता बढ़ाने की स्थिति में नहीं है तथा न ही वे सुदूर द्रव्यता की स्थिति हैं।

इसलिए प्राधिकारी द्वारा निष्कर्ष पर पहुंचता है कि घरेलू उद्योग को भौतिक क्षति हुई है।

(ड) आकस्मिक संबंध

14. यह स्थापित करने में कि घरेलू उद्योगों को हुई भौतिक क्षति अधीन देशों से किए गए आयात के कारण हुई है, प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि जापान, पुर्तगाल, इटली तथा स्पेन में हुए आयात को बाजार प्रतियोगिता में वृद्धि आवेदक की बाजार प्रतियोगिता गिरावट का कारण रही है जिससे घरेलू उत्पादन की कीमतों में सस से घरेलू उद्योग के लिए बाध्य ही रहे हैं। परिणाम स्वरूप घरेलू उद्योग उचित मूल्य प्राप्त करने की स्थिति में नहीं है। घरेलू उद्योग को हुई भौतिक क्षति, इस प्रकार कथित देशों से किए गए डम्पिंग आयात के कारण हुई है।

(च) भारतीय उद्योगों का हित व अन्य मुद्दे

15. आण्टी डयूटीज सामान्यतः डम्पिंग को समाप्त करने के लिए जो कि घरेलू उद्योगों में भौतिक क्षति का कारण है तथा भारतीय बाजार में खुली व उचित प्रतियोगिता की स्थिति को पुनः स्थापित करने के उद्देश्य में है जो कि देश के आम हित में है।

16. यह निश्चित है कि आण्टी डम्पिंग डयूटीज का लगाया जाना उन उत्पादों के मूल्य स्तर को प्रभावित करेगा जो कि सब्जेक्ट माल से तैयार होते हैं तथा परिणाम स्वरूप इन उत्पादों की संबंध प्रतियोगिता पर कुछ प्रभाव डाल सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित डयूटीज उपायों से कम नहीं होगी, विशेषतः यदि आण्टी डयूटीज का लगाया जाना उस राशि तक सीमित कर दिया जाए जो कि घरेलू उद्योगों को भौतिक क्षति को दूर करने के लिए आवश्यक हो। इसके विपरीत आण्टी डयूटीज उपायों का लागू किया जाना डम्पिंग करने की आवक से प्राप्त अनुचित सुविधा को भी दूर करेगा।

17. इससे घरेलू उद्योगों में आने वाली गिरावट दूर होगी तथा एकेलिक फाइबर का प्रयोग करने वाले उपभोक्ताओं को भी व्यापक विकल्पों को उपलब्ध कराएगी। आण्टी डम्पिंग डयूटीज लगाने के उपाय किसी भी रूप में सब्जेक्ट कंट्रीज से होने वाले आयात को सीमित नहीं करेंगे तथा इसलिए उपभोक्ताओं को उत्पादन की उपलब्धता को प्रभावित नहीं करेंगे।

(छ) लैंडिंग वैल्यू

18. आयात की लैंडिंग वैल्यू का निर्धारण डम्पिंग से संबंधित उपर्युक्त अनुच्छेद में जैसा निधारीत किया गया है, कस्टम डयूटीज के स्तर तथा एक प्रतिशत: लैंडिंग व दो प्रतिशत: हैंडिंग चार्ज जोड़ते हुए निर्यात मूल्य के आधार पर किया जा सकता है।

(ज) निष्कर्ष

19. पूर्वोक्त को ध्यान में रखते हुए देखा जा सकता है कि:

(क) अनुच्छेद ३ में उल्लेखित जापान, स्पेन, पुर्तगाल व इटली में उत्पादित व आयातित एकेलिक फाइबर भारत में सामान्य नीचे के मुख्य पर नियंत्रित किया जाता है जिसका कारण डम्पिंग है;

(ख) भारतीय उद्योग को भौतिक क्षति हुई है;

(ग) क्षति समायोजित रूप से सब्जेक्ट कंट्रीज से किए गए आयात के कारण है।

20. सब्जेक्ट कंट्रीज में उत्पादन या आयातित संपूर्ण एकेलिक फाइबर पर जाँच किए जाने तक तथा अन्तिम निर्धारण करने तक आण्टी डम्पिंग डयूटी का लगाया जाना आवश्यक माना जाता है।

21. इस पर विचार किया गया कि क्या डम्पिंग मार्जन से कम क्षति दूर करने के लिए प्रयास है। इस उद्देश्य के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग के उचित विक्री मूल्य के साथ आयात के लैंडिंग मूल्य की तुलना की गई। जहाँ कहीं भी अन्तर डम्पिंग मार्जन से कम डयूटी लगाए जाने की सिफारिश की जाती है। तदनुसार यह प्रस्ताव है कि केंद्रीय सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तिथि से जापान, स्पेन, पुर्तगाल तथा इटली में उत्पादित या आयातित कस्टमस एक्ट के कस्टमस सब हैंडिंग 5501.30 तथा 5503.30 के अंतर्गत अंतिम निर्यात होने तक एकेलिक फाइबर पर अस्थायी डम्पिंग डयूटी लगाए जाए। आण्टी डम्पिंग डयूटी कालम 4 में दी गई राशि तथा प्रति कि. गा. लैंडिंग मूल्य के अन्तर के अनुसार निम्न विवरण के अनुसार होगी:

जैसा कि नीचे कालम 5 में दर्शाया गया है न्यूनतम एन्टी डम्पिंग डयूटी प्रति किलो ग्राम होगी :—

क्र.सं.	देश	उत्पादन का नाम	राशि (रु.)	राशि (रु.)
1	2	3	4	5
1	जापान	आशी	82.97	9.04
		मितसुब्शी रेयान	80.39	5.32
		टोयबो इन	77.45	2.87
		अन्य निर्यातक	82.97	9.04
2	स्पेन	कोई भी निर्यातक	82.97	13.35
3	पुर्तगाल	कोई भी निर्यातक	74.21	5.04
4	इटली	कोई भी निर्यातक	82.97	11.12

22. आयात भी लैंडिंग वैल्यू एक उद्देश्य के लिए कस्टम द्वारा एक्ट 1962 के तहत निर्धारित ऐसे संबंध वैल्यू होगी तथा कस्टमस हेदिक एक्ट 1962 की धारा 3, 3ए, 8बी, 9 तथा 9ए को छोड़कर कस्टमस की सभी डयूटीज लागू होगी।

23. अतिरिक्त कार्यप्रणाली

इ. अतिरिक्त उपलब्धियों की अधिसूचना किए जाने के लिए निम्नलिखित कार्यप्रणाली अनपाई जाएगी:

(क) प्राधिकारी इन उपलब्धियों पर सभी सबंद्ध दलों से टिप्पणी आमंत्रित करता है जो कि अन्तिम निर्यात के लिए विचार में लाई जाएगी।

(ख) निर्यातक आयातक आवेदक तथा अन्य संबंद्ध माने जाने वाले दलों को प्राधिकारी द्वारा अलग से संबोधित किया जा रहा है जो कि इस अधिसूचना के भीतर अपने विचारों से अवदत करा सकते हैं। अन्य कोई संबंद्ध पार्टी भी इस सूचना के प्रकाशन की तारीख से चालीस दिन के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है।

(ग) प्राधिकारी सभी संबद्ध पार्टीयों को मौखिक निवेदन के लिए भी अवसर प्रदान करती है।

(घ) प्राधिकारी अन्तिम फाइंडिंग्स घोषणा से पूर्व आवश्यक तथ्यों का खुलासा भी करेगा।

रती विनय झा, नामित प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE

PRELIMINARY FINDINGS

NOTIFICATION

New Delhi, the 20th October, 1998

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Acrylic Fibre from Japan, Portugal, Spain and Italy—Preliminary Findings.

32/1/97-ADD : Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:
 - i. The Designated Authority (hereinafter also referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from Indian Acrylic Ltd., Pasupati Acrylon Ltd., JK Synthetics Ltd. and Consolidated Fibres and Chemicals Ltd (referred to Indian Acrylic, Pasupati, JK and consolidated hereinafter) respectively on behalf of the domestic industry, alleging dumping of acrylic fibre (hereinafter also referred to as subject goods) originating in or exported from Japan, Portugal, Spain and Italy.
 - ii. Preliminary scrutiny of the application filed by petitioner revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was therefore considered as properly documented;
 - iii. The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner decided to initiate the investigations against imports of acrylic fibre from Japan, Portugal, Spain and Italy. The Authority notified the Embassy of Japan, Portugal, Spain, and Italy about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule 5(5) of the Rules;
 - iv. The Authority issued a public notice dated 7th January 1998 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti - dumping investigations concerning imports of Acrylic fibre classified under custom code 550330 of Schedule 1 of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from Japan, Portugal, Spain and Italy (hereinafter also referred to as the subject country).
 - v. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by the petitioners) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the rule 6(2);
 - vi. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose details were made available by petitioner) of Acrylic fibre in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter;
 - vii. Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of Acrylic fibre made in India during the past three years, including the period of investigation. No information was, however, received from CBEC;
 - viii. The Authority provided a copy of the petition to the known exporters and the Embassy of the subject countries in accordance with rules 6(3) supra. A copy of the petition was also provided to other interested parties, wherever requested;
 - ix. The Authority sent a questionnaire to elicit relevant information, to the following known exporters, in accordance with the rule 6(4);
 - (a) Komatsuya Corporation – Japan
 - (b) Fibras Sinteticas de Portugal – Portugal
 - (c) Courtaulds Europeans Fibre – Spain
 - (d) Monte Fibre SPA – Italy.

A number of parties requested for extension of time, which was allowed by the Authority by four weeks. The responses received after the extended time have not been considered for determining the preliminary findings.

The following exporters responded:

I. Japan

- (a) Ashahi Chemicals Industries Ltd.
- (b) Sumikin Bussan Corp.
- (c) Nichimen Corporation
- (d) Marubeni Corporation
- (e) Mitsubishi Rayon & Ltd.
- (f) Toyobo Co Ltd.
- (g) Kanematsu Corp.
- (h) Komatsuya Corp.
- (i) Itochu Corp.
- (j) Mitsui & Co.
- (k) Mitsubishi Corp.
- (l) Kaneka Corporation

II. Italy

- (a) Montefibre SPA

III. Spain

- a) Montefibre Hispania SA Spain
- b) Courtaulds Espana SA

IV. Portugal

- a) Fisipe

x. The Embassy of the subject countries in New Delhi was informed about the initiation of the investigation in accordance with rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to the Embassy, alongwith a list of known exporters/producers.

xi. A questionnaire was sent to the following known importers of Acrylic fibre calling for necessary information in accordance with rule 6(4);

- Vardhman Spg & Gen Mills – Ludhiana
- Nahar Spg Mills Ltd. - Ludhiana
- Malwa Cotton Spg Mills Ltd.- Ludhiana
- Rajasthan Spg & Wvg Mills Ltd.- New Delhi
- Winsome Textile Inds Ltd. - Chandigarh
- Siddhartha Super Spg Mills Ltd.-New Delhi
- Bhiwani Textile Mills - Haryana
- Adhinath Textiles Ltd.- Ludhiana
- Shruti Suyntetics Ltd.- Udaipur
- Arihant Spg Mills.
- Banswara Syntex Ltd.
- Atlantic Spg & Wvg. Mills.
- Arham Spg Mills, Ludhiana
- Ashupati Textiles.

A number of parties requested for extension of time, which also was allowed by the Authority by four weeks. Response to the questionnaire was filed by the following;

- Association of Wool Mark Knitwear - Ludhiana.
- Ludhiana Spinner Association – Ludhiana

- Kohinoor Woolen Mills _ Ludhiana
- Oswal Woolen Mills – Ludhiana
- Arham Spinning Mills – Ludhiana
- Vardhman Spinning & General Mills Ltd., _ Ludhiana
- Nahar Fibres Ltd. – Ludhiana
- Shruti Synthetic Ltd. – Udaipur
- Adinath Textiles Ltd. – Ludhiana
- Rajasthan Spinning & Weaving Mills Ltd. – Mumbai
- Malwa Cotton Spinning Mills – Ludhiana

xii. Additional information regarding injury was sought from the petitioners, which was also furnished;

xiii. The Authority conducted on-the-spot investigation at the premises of the co-operating exporters and petitioners to the extent considered necessary;

xiv. The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

xv. Cost investigations were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioners also as to ascertain if anti-dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry. It is submitted by the forum of acrylic fibre manufacturers that, JK Synthetics has since been closed and therefore it is difficult to submit any information with respect to the company and thus cost of production data could not be obtained from JK Synthetics Ltd.

xvi. **** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

xvii. Investigation was carried out for the period starting from 1st April, 1996 to 31st March, 1997.

B. PETITIONER' VIEW

2. The petitioners have raised the following major issues in their petition and subsequent submission.

(a) The combined capacity of Indian Industry is 102000 MT PA. The combined capacity of the petitioner is around 75% of total Indian production. The petitioners have submitted support expressed by the forum of acrylic fibre manufacturers, signed by conveyer. The petitioners have submitted that this forum represents other Indian producer and therefore application made by petitioner may be treated as made by or on behalf of the domestic industry and the petitioner may be treated as the domestic industry.

(b) Dependence of the country on imports has gone down with the installation of more and more plants, yet a lot of fibre is still being imported. Faced with heavy surplus capacity, loss of domestic market and fall in exports, the exporters from Europe and Japan have resorted to panic selling and dumping of fibre in India.

(c) The country today has sufficient capacity to meet the current as well as the future demand. The capacity world over is significantly higher than the global demand and a lot of producers are faced with lot of surplus capacity.

(d) The petitioner has claimed the normal value in the case of Japan on the basis of domestic price prevailing in Japan, in the case of Portugal on the basis of domestic prices prevailing in Portugal as well as on the basis of constructed cost of production, in the case of Spain on the basis of domestic prices prevailing in Spain as well as on the basis of constructed cost of production, and in the case of Italy on the basis of domestic price prevailing in Italy as well as on the basis of constructed cost of production.

(e) The petitioner has requested that EU as whole should be considered for the purpose of levy of anti-dumping duty as Portugal, Spain and Italy forms an integral part of European Union and are part of 16 members European Union who have signed the common treaty which abolishes all trade barrier between the European countries as trading, imports, exports and sales. Thus the probe be against the European Union as a whole.

(f) The petitioner is claiming injury due to

- increase in imports from the subject countries
- increase in market share of import from the subject countries
- selling prices significantly lower than the cost of production resulting in huge financial losses to petitioners.
- High level of stocks. Higher capacity utilization, production and sales are at the cost of sales below cost of production and high inventories
- The industry is finding it difficult to expand in view of severe financial constraints arising out of sustained dumping resulting in losses and poor market opportunities.
- Extremely poor ability to raise funds
- Negative return on massive investments
- Inability to fund research and development.

C. 3 **VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS, AND OTHER INTERESTED PARTIES**I. **IMPORTERS' VIEW**

- (a) The claim made by the domestic industry that there are five units in the country having installed capacity of 1,02,000 MT is not a factual information. It is further stated that J.K. Synthetic Ltd. has gone into liquidation and taken over by Board of Industrial & Financial reconstruction. The company is not producing acrylic fibre for last three years.
- (b) At present the effective capacity is not more than 70000 Tonnes p.a. as the first plant of IPCL established in 1979 has already lived its life. The aforesaid capacity of 70000 MT consist of 36000 tonnes of wet spun acrylic fibre and 34000MT of Dry spun acrylic fibre. This capacity is not sufficient to meet the demand in the country.
- (c) The consumption of acrylic fibre is continuously growing as it is a cheaper substitute for the wool. Due to inadequate production of acrylic fibre in the country, the spinning and knitting industry of acrylic had to depend upon imports.
- (d) The production as well as imports of acrylic fibre are growing as the consumption of acrylic fibre is increasing. The domestic production is not able to meet the full requirement of total industry and therefore imports are inevitable.
- (e) The claim of the petition that China has reduced imports of acrylic fibre and Europe is the major producer of acrylic fibre is incorrect.
- (f) Marubeni of Japan in collaboration is putting up an acrylic fibre plant with a capacity of 34000 tons. In case the capacities in the countries were sufficient, such international companies are not going to make such heavy investment in the country.
- (g) M/s Indian Acrylic Ltd is producing only dry spun fibre made under Dupont Technology. The total imports of fibre in the country constitute more than 95% of the wet spun fibre and thus Indian acrylic can not be considered to have suffered injury and thus can not be a party to petition. Imports of Dry spun fibre is negligible. Japan, Portugal and Spain do not produce any dry spun fibre.
- (h) The market of acrylic in India clearly distinguish between wet spun and dry spun fibre. Two type of fibres are marketed giving them specific brand names. In the common Indian market "Inda fibre" is known as wet spun fibre and "supa fibre" is known as dry spun fibre. "Supa fibre" is always sells at a discount of Rs. 7/- to Rs. 10/- per kg and therefore dry spun fibre can not be equal to wet spun fibre. 90% of the import of acrylic fibre into the country is of wet spun fibre. These are two different products as their process is also different. There is a considerable difference in dyeing of yarn made from wet spun fibre and dry spun fibre. Thus these are two different products.
- (i) The production undertaken by Indian manufacturer is just of routine type and can not cater to all needs of acrylic industry. The claim of the domestic industry that the process of manufacturing, the requirement of raw material and production cost largely remain the same with respect of any deniers of fibre is wrong and misleading.
- (j) The long list of usage of acrylic fibre submitted by petitioner is mis-leading information with regard to Indian market. 95% of the acrylic fibre in India is consumed for sweaters, shawls and blankets.
- (k) The domestic manufacturers are creating scarce situation by eliminating healthy competition from the foreign manufacturers.

- (l) Import of acrylic fibre is never a cheaper substitute as the imports can be effected only after payment of customs duty and CVD. Imports are effected not due to its cheaper prices but due to non-availability of fibre from domestic manufacturers.
- (m) Domestic manufacturers always have a tendency of charging higher price for the products. Their price quotation have no relevancy to their major raw material i.e. Acrylonitrile (ACN) which is 90% raw material of acrylic fibre and is always near to the price of DMT and PTA prices. DMT and PTA are raw material for polyester fibre also. As on today the price of acrylic fibre are double than the price of polyester fibre and therefore massive profits are being concerned by acrylic fibre manufacturers.
- (n) The ACN prices have fallen considerably during 1996-97 but the domestic manufacturers have not reduced their prices and have taken full benefits of scarce supply of acrylic fibre in the country. Acrylic fibre manufacturers have formed a forum which is monopolising the trade.
- (o) The plant of the petitioner are being run most inefficiently due to which their cost of production is higher and they are adding this cost to the pricing of products. The domestic industry production in 1996-97 was 61187 MT against the installed capacity of 102000 MT. Thus they are operating at about 60% of the capacity due to which their cost of production is higher.
- (p) The root cause of injury to domestic industry is uneconomical plants, poor quality, and the erratic supplies. The domestic industry wants to pass off their inefficiencies on the Indian consumers in the grab of Anti-dumping duties.
- (q) The domestic producer of acrylic fibre are not interested in Research and Development (R&D). They make very narrow range of fibres. The industry is left with no option but to rely on imports of fibre to make a better product. The spinning industry is already in recession. Any restrictive measure will lead to the closure of the mills leaving thousands of workers unemployed. Anti-dumping duties will raise the cost structure of the industry. Since Acrylic Fibre is a substitute of wool, the end product is used mainly by lower section of society who will be hard hit. Such duties may attract retaliatory measures from the affected countries with regards to export of acrylic products from India.
- (r) It is pointed out that M/s Mitsubishi Rayon Co Ltd. is producing some special type of fibre in their brand "Vonnel" and "finel". M/s Ashai of Japan is also producing a special fibre in the brand name of "Cashmilon". As no Indian manufacturer is producing such type of special fibre, these fibres be kept out of preview of anti-dumping duties.

II. EXPORTERS' VIEW

- (a) The petitioners do not satisfy the definition of "domestic industry" as per Rule 2(b). It is pointed out that petitioners have suggested that four of the fibre producers be treated as domestic industry. However JK Synthetic with an installed capacity of 24000 MT has been closed and does not manufacture acrylic fibre for last two years. Indian acrylic with an installed capacity of 24000 MT Per annual can not be considered as domestic industry as its subsidiary Indian Chemicals Ltd has imported acrylic fibre from Japan during the period of investigation. This leaves consolidated fibre and Pasupati Acrylon Ltd., whose total installed capacity is 30000 MT and output for 1996-97 is 29940 MT which does not constitute a major proportion of the total domestic production. It constitutes less than 50% of the total output and their combined capacity is about 30% of the total installed capacity. The actual production including that of IPCL is 82819 MT for 1996-97 and figure of production given by petitioner are not correct.
- (b) Calculation of dumping margin etc should be done grade wise as done by Authority in the earlier case of Acrylic fibre from USA. There is no domestic manufacturer of GK 3.0 Denier, K 75 3.0 Denier, K 75 6.0 Denier, FKL 2 5.0 Denier, and hence these grades be excluded from investigation. There are no like products of these grades in the domestic market.
- (c) There is no injury to the petitioner.
- (d) The loss suffered by domestic industry earlier has been reduced in 1996-97 in respect of one petitioner. Other petitioners who were earlier incurring losses have started making profit during the period of investigation. The production and capacity utilisation of the three petitioners have increased considerably. They are operating at

98-107% of capacity utilization. Sales price have decreased because the cost of manufacture has decreased during the period of investigation. Acrylonitrile (ACN) is the main raw material required for manufacturing acrylic fibre. The price of Acrylonitrile have decreased from US\$ 1400 PMT in 1995 to US\$ 800 in February 1997. In domestic market the price of ACN has gone down from Rs. 50000/- PMT in Feb 95 to Rs. 38000/- PMT in 1996-97. With reduction in the price of major raw material, the cost of manufacture has reduced and hence the selling price have also reduced.

- (e) The petitioner do not have sufficient capacity to meet the demand. In future also, the domestic industry including the capacity which are being generated, will not be able to meet the growing demand of Acrylic Fibre, even if the domestic industry operates at 100% capacity utilisation.
- (f) Assessment of injury be done not cumulatively but exporter wise as cumulative assessment of the effect of import is inappropriate in view of the fact that different grades may be exported by different exporters and the dumping margin and injury margin would have to be computed exporter wise and grade wise.
- (g) The increase in imports is due to the fact that domestic producers have not been able to meet the demand even at near full capacity utilisation.
- (h) The exporters have denied to claim of domestic manufacture that they sold the fibre at a price below the cost of production as they have made profits during period of investigation. Also none of the producers of acrylic fibre have any plans for expansion of capacities.
- (i) The question of ability to raise found is irrelevant. None of the domestic producers have any R&D facilities.
- (j) It is pointed out that the Designated Authority has initiated the investigation on the basis of proof of domestic price in Japan from Komatsuya Corp. This invoice, it is submitted, is a fictitious invoice and therefore investigation which has been started upon a fraudulent premises can not be sustained.
- (k) The period of investigation fixed by Designated Authority is unfair and damaging to exporters. By selecting in period which is over nine months before the date of initiation notification, the Designated Authority is calling upon historical data which has little or no bearing upon the prevailing market conditions. The petitioner has deliberately manipulated data to select a period in which imports from Japan have increased as the Authority had earlier imposed duty on import of acrylic fibre from USA, Thailand and South Korea. Increase of imports from Japan was due to the threatened duties upon USA, Thailand and South Korea and not because of any dumping by Japan.
- (l) Domestic industry has higher production cost for reasons particular to its economy. The Indian Industry has to bear much higher interest and infrastructure cost making it uncompetitiveness in the international market. Injury to Indian Industry because of these factors can not be attributed to dumping.
- (m) There is no evidence of causal link between the alleged dumped imports and the injury to the domestic industry in the petition.
- (n) Most of the Indian consumers have purchased imported fibre for export of acrylic yarn as these consumers enjoy certain benefits of duty. If the quantity of acrylic fibre imported and consumed for exports is excluded, the balance quantity forms a very small percentage of indigenous capacity and annual production.
- (o) Quality of Indian fibre is inferior.
- (p) The acrylic fibre exported from Japan and acrylic fibre produced by domestic industry are not like articles as the Japanese fibre is of much superior quality. "Conjugate" and "Special" fibres are different goods which are not produced in India and therefore these should be excluded from investigation. TOW, TOP, Waste, synthetic staple fibre of acrylic, Carded, Combed are distinctly separate goods and therefore be excluded from the scope of investigation.
- (q) Comite International De La Rayonnet Des Fibre Synthetiques (CIRFS) on behalf of exporters from Portugal, Spain and Italy has stated that injury suffered by the Indian Industry was due to factors other than the effects of alleged dumping and that consequently there was no causal relationship between the allegedly dumped imports and any injury suffered by the domestic industry. Regarding the increase in imports, it is stated that these exporters entered into the Indian Market in 1995-96 and thus the increase in exports is normal. It is also stated that the individual market share of the European exporters were negligible. Regarding the fall in imports price, it is stated that the fall was due to general collapse in the world price of acrylic fibre during the period. It is also

stated that no injury has been caused by loss of production and production has increase by nearly 12% in 1996-97. Further the closing stock at the end of 1996-97 given in petition is equivalent to 1.8 week of sales and thus there is no evidence of an excessive stock and thus no injury is caused by the need to hold increased stock. Further there is no evidence of loss of sale by the domestic producers. Regarding prices depression it is stated that Indian producer did not suffer price depression in 1997-98 and none was caused by imports under investigation. It is also stated that substantial quantities were imported from other countries at prices below those of imports under investigation. The average price of imports concerned compare with-lowest average price of the imports from Japan, Portugal, Spain or Italy. Thus if any price depression were experienced by the Indian producers it was not due to the prices of imports from Japan, Portugal, Spain and Italy and there is no causal connection between these imports and any injury suffered by the Indian Industry in this respect. It is further stated that another factor other than the allegedly dumped imports which was a cause of injury to Indian producer is the collapse in the world market price of acrylic fibre which occurred in the second half of 1995 and first half of 1996 and prices in Asia fell by 17% in between 95-96 and 96-97 and the fall in the Indian producer's price is only of 10.5% which reflects the high degree of protection enjoyed by Indian producer. It is also stated that the Indian acrylic fibre Industry is characterised by small production units, many of which are old plants imported second hand many years ago and the inability to take advantage of advances in technology. In modern production of product, advantage can be taken of economies of scale and latest technology. Due to this, the cost of production in Indian plants is relatively high and producers are unable to supply the full range of products.

D. EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED

4. The submission made by exporters, importers, petitioner and other interested parties have been examined and considered and have been dealt at appropriate places in these findings.

E. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

5. The product involved is Acrylic Fibre both in shrinkable and non-shrinkable form, ranging from 1.5 Denier to 8.0 Denier and is classified under custom code 5501.30 and 5503.30 of Customs Tariff Act, 1975. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of present investigation. The acrylic fibres is a economical substitute of wool which is expensive. Acrylic fibre is produced either through wet technology or dry technology. Acrylic fibre has application in day to day life use i.e. apparel, household uses and some industrial use.

F. LIKE ARTICLES

6. Acrylic fibre is produced and sold in various specification. The various specification, however, merely depict the properties of the fibre and may result in varying end uses. However there is no significant difference in terms of process, equipment or technology to produce different varieties of acrylic fibre. It is also observed that market pattern of different varieties is also similar. It is therefore considered that acrylic fibre produced and sold by the domestic industry has characteristics closely resembling to the acrylic fibres imported from Japan, Portugal, Spain and Italy and may be treated as like articles within the meaning of the rules supra.

G. DOMESTIC INDUSTRY

7. The petition is jointly filed by M/s Indian Acrylics Ltd., Chandigarh, Pasupati Acrylon Ltd., New Delhi, J.K. Synthetics Ltd., New Delhi and Consolidated Fibre and Chemicals Ltd. Calcutta. It is claimed by the petitioner that Indian petrochemical Ltd., having their plant at Vadodra is the other company producing acrylic fibre. Thus, it is claimed that these are the five units who produce acrylic fibre having a combined capacity of 1,02,000 MT. The total production of acrylic fibre in 1996-97 is stated as 79000 MT and the production of petitioner companies is 61187 MT. The petition has the support of "forum of Acrylic Fibre manufacturer" and all the five companies are members of the forum of acrylic fibre manufacturer. Thus the petitioner accounts for more than 25% of domestic production and therefore have a standing to file a petition on behalf of domestic industry under the rules.

H. DUMPING

8. Under Section 9A(1)C, normal value in relation to an article means:

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:

- (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section(6); or
- (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

9. The Authority sent questionnaires to the exporters from the subject countries in terms of the section cited above. The claim made by the exporters with regard to normal value and export price are as under:

I. 10. CLAIMS OF THE EXPORTERS

Country: Japan

a. Kanematsu Corporation, Osaka, Japan.

The exporter has claimed that the product they shipped was Acrylic staple fibre "Exlan Brand" for which producer is "Toyobo Co Ltd.". It is stated by them they exported *** kg of this brand during the period of investigation. It is also claimed by them that "Exlan" brand acrylic fibre is all for high pile knitting uses and all of these products are specialty-fibres. These fibre have flat cross section and this type of fibre is not produced in India. It is also claimed that this being a specialty acrylic staple fibre command extremely high selling price as compared to normal acrylic staple fibre and this clearly proves that this is a distinct product. Also almost all the product exported by them were in 10 denier so that is coarser denier than the Authority is investigating in this case. It is also stated that they exported only *** kg of 5 denier fibre during the said period and it is also a specialty type of fibre which has a flat cross section. Based on this, they have stated that they are not required to response to the questionnaire for exporters.

They have also claimed that they shipped all mod acrylic staple fibre "Kanecaron" brand of which "Kaneka Corporation" is the producer. It is stated that they exported *** kg of this brand. It is also claimed that "Kanecaron" brand mod acrylic fibre is not the object of the investigation and should be excluded from the investigation on the following grounds.

- (i) "Kanecaron" brand modacrylic fibre consist of acrylonitrile and polyvinyl-chloride with its ratio of about 50-50%. This means the relative fibre has content of a acrylonitrile with less than 85%.
- (ii) Modacrylic staple fibre is totally not in production in India and therefore there is no injury.

They have submitted some invoices of exports to India. They have not submitted the response in the prescribed proforma due to reasons explained above and have contended that there is no case against them for levy of anti-dumping duty.

b. Komatsuya Corporation

The exporter has claimed that they were never the producer nor the trader of Acrylic fibre. It is stated that they had contributed to the customers to supply various kind of chemical and never handled synthetic fibre and never exported acrylic fibre itself.

c. Itochu Corp.

The exporter has informed that during the period of investigation, they did not have any export sale of acrylic fibre to India and therefore regretted that they could not assist in the investigation with the required details.

d. Mitsubishi Corporation

They have stated that they have not made any export of acrylic fibre to India during the period of investigation and therefore requested to exempt their company from the procedure of investigation.

e. Kaneka Corporation/Mitsui & Co.

They have stated that during the period of investigation they exported Kanecaron brand modacrylic staple fibre and pretax brand modacrylic staple fibre to India through Mitsui & Co Ltd. and Kanematsu Corp, the details of which would be supplied by Mitsui & Co Ltd. and Kanematsu Corp Ltd. respectively. It is also stated that the product exported do no answer to the description of product involved as indicated in the petition filed on behalf of the domestic industry. Kaneka Corp producers only modacrylic fibre, which consist of about 50% of the acrylonitrile units by weight. The product under investigation is acrylic fibre which is long chain of synthetic polymer composed of at least 85% by weight of acrylonitrile units. Further there is no producer of modacrylic fibre in India. Further the volume of imports as compared to domestic production and capacity is negligible and therefore the interest of domestic industry cannot be affected.

They have not submitted the information called for in the formats in view of above and submitted that on a *prima facie* basis, no case is made out for levy of anti-dumping duty on its product either with respect to the product, the margin of alleged dumping thereof or the resultant injury to the domestic industry.

f. **Nichimen Corporation**

They have stated that they are a trading company and purchased the acrylic fibre from the manufacturer under terms of "Makers FOB" and exported them to their buyer under terms of CIF Bombay.

Thus they do not know all charges before FOB and all charges after arrival of their cargo at Bombay Port. Regarding the charges before FOB, it is stated that the producer Mitsubishi Rayon Co Ltd. will reply through their counsel. Regarding domestic prices, it is stated that they do not have record of selling these type of acrylic fibre to domestic market. Since they are trader, they have expressed their inability to submit about "cost of production".

They have exported one consignment to India during the period of investigation. However as per the information submitted, the price at ex-factory level for export transaction is shown as "Unknown" and about many price adjustment they have indicated "unknown" in App 3A. Thus neither the export price nor the normal value can be determined from the information submitted.

g. **Asahi Chemical Industries Ltd. & Sumikin Bussan Corp Osaka.**

It is claimed that exports to India are undertaken by Asahi through Sumikin which is a large trading house in Japan. The fibre is sold by Asahi to Sumikin, on principal to principal basis on 30 days credit 'Sumikin pays price and interest for the goods. Acrylic fibre is sold by Sumikin to Indian importer on CIF price basis.

They have submitted the price structure grade wise and in two parts. Part A deals with price structure from the time sumikin purchases the goods till sold on cif basis and part B deals with the price structure till the fibres is sold to Sumikin.

Sumikin has claimed the deductions on account of overseas freight, overseas insurance, Indian agent commission, bank charges, and Sumikin commission to arrive at the purchase price from Asahi. M/s Asahi has claimed the deductions on account of inland freight, insurance, storage, selling and general administration expenses while arriving at the ex-factory level of the export price. They have given credit on account of interest received.

While calculating the domestic price at ex-factory level, they have claimed price adjustments on account of rebate, packing (label charges), inland freight including insurance which is borne by trucking company, storage, selling and general admn. expenses. It is also claimed that neither Asahi nor Sumikin received any incentive on export sales of acrylic fibre from Government of Japan.

h. **Mitsubishi Rayon Co Ltd. (MRC)**

It is claimed they are the producer of rayon staple since 1933. It is claimed that three out of five type of acrylic fibre exported by MRC to India during Period of investigation are of special type and should be excluded from the present investigation. These are V 86 – Mohair type, V 85 – Super shrinkable type and H 525 – patented technology fibre. It is claimed that V 86 mohair type differs from the acrylic fibre produced by Indian industry in terms of manufacturing process, technology, plant and equipment, physical characteristics, technical specification, uses, pricing, consumer perception, public perception etc. V86 type has a bright shine. It is claimed that V 85 fibre must be used in conjunction with V86 in order for the end product to have a uniform colour. H 525 is a unique product, the technology differs from acrylic fibre exported to India.

It is further submitted that MRC caters to Japanese and overseas market. In the overseas market, MRC does not sell the goods directly and the same is sold through traders. In case of India, the goods have been exported primarily through Marubeni Corp. Thus, it is claimed that, MRC has no information about the expenses incurred by Marubeni on account of overseas, freight, marine insurance etc. It is also submitted that acrylic fibre of 9 D and above and also tow and top should be excluded. It is also submitted that Japan is a high cost economy and customer servicing cost in Japan are significantly higher.

They have claimed price adjustment on account of variable expenses, fixed expenses and indirect expenses while arriving at the ex-factory level in the export price to India. Similar deductions/price adjustment have been claimed from the domestic price to arrive at the ex-factory level price in the domestic market sales. It is also submitted that list price mentioned in App 3A is the selling price net of discount/rebate and all direct expenses incurred by the company in shipment of goods such as inland freight. Similarly in respect of App 3 B, the selling price is shown net of discount/debate to customers commanding higher volumes except for H 525 and all direct expenses incurred by the company in shipment of goods such as inland freight. The exporter has further stated that they have claimed an adjustment of yen *** per kg from the net selling price in home market and this is based on the differences in the expenses incurred by the company in two market..

Marubeni Corp.

It is claimed by the exporter that they are a trading corporation and have been advised by Mitsubishi and Toyobo to file responses to Designated Authority. It is stated that they exported acrylic fibre to India which is purchased from Toyobo or Mitsubishi on FOB basis and all expenses upto FOB are borne by the company producing the goods. They sell to Indian customers primarily on CIF basis. It is further stated that details of expenses incurred by the company on account of overseas freight, marine insurance etc is being furnished by Marubeni so as to complete response and co-operation by Mitsubishi & Toyobo. It is also stated that though they are selling in domestic market, they are not producer and only trader and hence not submitting the information in relations to domestic sales as the Designated Authority does not assess traders. They have submitted importer wise detail showing the invoice no. and date, contract no. and date, bill of lading no. and date, specification, quantity, invoice value, purchase bill etc and which are produced by Mitsubishi or Toyobo.

However they have not submitted any invoice or evidence in support of their claims.

Toyobo Company Ltd.

It is stated by them that they hold directly or indirectly 80% share of Japan Exlan Co who produces acrylic fibers and sell them exclusively to Toyobo. Toyobo in turn sell under "Exlan" brand name. Toyobo itself does not produce acrylic fibre. Thus Toyobo has filed a consolidated reply with exlan. It is also stated that during the period of investigation, exports were done exclusively through Marubeni Corp. Some special type of fibre (of higher denier and or flat/section fibre) was exported through Kanematsu.

Further, Toyobo sells in domestic market directly to consumers as also through a number of Japanese trading houses.

It is further claimed that since company does not directly exports goods to India, they do have information about the expenses incurred by Marubeni on account of overseas freight, marine insurance etc. it is stated that they exported conjugate type (3.0 D and 2.5 D), Regular Type (1.4D, 2.0D & 3.0D) and special type (4.5D, 9.0D & 13. D) to India .

Country - Spain

Monte fibre hispania S.A Spain

The exporter has stated that they are a producer of acrylic fibre in Spain. It is also stated that their company did not export acrylic fibre to India during the period of investigation and thus there is no dumping on their part. They have also requested that in the event of any measures being applied on a country wide basis, rather than a company basis, they should be excluded from the measure.

Courtaulds Espana SA Spain

It is claimed that they have neither received subsidies, nor tax exemptions nor incentives on export sales and imported raw material purchases other than suspension of raw materials tax import where they are incorporated into export products. It appears that they are exporting 4 grades of acrylic fibres to India namely staple 1.7 dtex, 2.2 dtex, 2.5 dtex and 3.3 dtex. They have submitted the information about their exports to India, domestic sales and exports to other countries in respect of above grades. They have claimed

the price adjustment on account of commission /rebate, credit cost, inland freight, handling, overseas freight and insurance while calculating ex-factory level price in the export price to India. They have claimed price adjustment of prompt payment discount, credit cost, inland freight while calculating domestic price.

They have also claimed that they are incurring loss on export sales to India and earning profit on domestic sales. However they are not earning profit on 2.5 dtex in domestic sales. The exporter has also claimed that they do not use list price. Prices are negotiated by individual customer. It is also claimed that a higher price can normally be obtained in domestic market on the basis of better technical support, after sales service and quicker and more flexible delivery. It is further stated that in the Indian market the lower prices partly reflects their desire to establish a presence in the market through a limited number of sales to key customers. They have claimed the different cost for export goods and domestic goods on the assumption that contract ACN purchases are for the regular domestic market while spot purchases covering one of export operations.

Country - Italy

Montefibre SPA Italy

They have claimed that no incentive are given by the Italian Government on export sales. It is stated that all their sales are on CIF Indian port basis. They have claimed price adjustment on account of commission, inland transport, overseas transport and insurance while calculating ex-factory level in the export price to India. They have claimed price adjustment on account of payment and quantity discount, transport cost, promotion – advertising – R&S – technical services cost, stock (warehousing and financing) while calculating the domestic price. They have not submitted the price-structure grade/denier wise. Regarding promotion – advertising – R&S – technical service cost, it is stated that these cost are allocated to domestic sales and to EU countries sales and India is excluded. Regarding stock (warehousing and financing) charges, it is stated that these costs charged only to sales of domestic market and sales to India are exclusively supplied with production.

The price claimed at ex-factory level in respect of export to India is US\$*** per kg. and in respect of domestic sales, it is US\$ *** per kg.

Country - Portugal

Exporter – Fibras Sinteticas De Portugal SA, Portugal

It appears that they are exporting 3 grades of acrylic fibre viz Denier 2.2, Denier 3.3, and Denier 5.6. They do not appear to have sales to other countries. They have claimed price adjustment on account of discount, inland freight, overseas freight, overseas insurance shipping charges while calculating export price to India. They have claimed price adjustment on account of discounts, inland freight, storage, cost of credit while calculating the domestic price.

It is also claimed that no financial assistance is provided to customers. There is no special price list for exports to India and prices being negotiated individually with each customer. Also there is no other matter with Indian customer which affects the actual export price of the goods and prices are at sight payment basis. They have submitted sample invoices in respect of export sales and domestic sales.

J. EXAMINATION OF THE CLAIMS OF THE EXPORTERS BY THE AUTHORITY

11. On the basis of the facts available with the Authority, it is observed that the various deniers of Acrylic Fibres do not display any significant difference in terms of the costs or prices and are in the same range. Moreover, there is a considerable amount of substitutability among the different varieties. The Authority has, therefore, grouped all fibres (described as product under consideration) for these investigations.

DUMPING MARGIN

ASAHI CHEMICAL INDUSTRIES LTD.

NORMAL VALUE:

a) Normal Value is based on the weighted average selling prices to the trading houses. Adjustments on account of discounts given on invoices, packing, inland freight and expenses specific to particular markets have been allowed. The Authority disallows claims made on account of discounts based on turnover and end-use as the incidence of such discounts/rebates is not ascertainable at the time of pricing decisions. Adjustment on account of storage cost has been claimed on the basis of inventories held by the company, which is also being disallowed.

EXPORT PRICE:

i) The company has exported the subject goods through Sumiken Bussan, who have also furnished necessary information and were verified. The export price has been determined on the basis of the CIF price at which goods have been sold by Sumiken to the Indian buyers. While arriving at export price, adjustment

on account of overs. . . , freight & insurance, bank charges, commission to the Indian agent, inland freight and specific expenses on account of export sales have been made to arrive at the ex-works export price. Asahi has claimed expenditure incurred on account of loading of goods, their marking, custom clearance, documentation and inspection under the head "storage". Though the expenditure has been claimed as storage costs, it is in the nature of expenditure incurred by the company on export of goods and, therefore, has been deducted from the selling prices. Further, Asahi has sold goods to Sumiken on credit and has charged interest on the credit sales. This being an income of Asahi, has been added to the selling price.

On the basis of above, the normal value (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. export price (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. Thus the dumping margin is US \$ *** per kg., which is 24.36 % of the export price.

TOYQBO CO.

NORMAL VALUE:

The selling price has based on the basis of weighted average of the selling prices in the home market. The company has claimed adjustments on account of differences in the expenses incurred in the home market and exports to India on the basis of its income statement, which have been allowed.

EXPORT PRICE:

The company has exported the subject goods through Marubeni Corp., who have also furnished necessary information and the same were verified to the extent deemed necessary. The export price has been determined on the basis of the CIF price at which goods have been sold by Marubeni to Indian buyer. Marubeni has claimed adjustments on account of ocean freight, insurance, commission and interest on the basis of actual expenses and therefore, have been allowed. Charges after ex factory and upto FOB incurred by Toyobo Co and claimed as price adjustment on account of inland freight, insurance, shipping charges and storage on the basis of the basis of actual expenses incurred have been allowed.

On the basis of above, the normal value (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. export price (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. Thus the dumping margin is US \$ *** per kg., which is 5.72 % of the export price.

MITSUBISHI RAYON

NORMAL VALUE:

The selling price is based on the basis of average of the selling prices to a customer purchasing highest volumes. It has, however, not been demonstrated by the company that the selling prices to various customers depended on the volumes. It is also found that the company has sold fibre to its related companies. Selling prices have, therefore, been determined on the basis of average selling prices after reducing sales to related companies.

The company has claimed adjustments on account of differences in the expenses incurred in the home market and exports to India on the basis of its income statement, which have been allowed.

EXPORT PRICE:

The company has exported the subject goods through Marubeni Corp., who have also furnished necessary information and the same were verified to the extent deemed necessary. The export price has been determined on the basis of the CIF price at which goods have been sold by Marubeni to Indian buyer.

Adjustments on account of expenses after FOB and upto CIF for overseas freight, overseas insurance, Indian agent's commission have been made.

- i) Sumiken commission: This is the commission which Marubeni has earned. This has been worked out by the company considering the price at which the goods have been sold by Mitsubishi Rayon and prices at which goods have been sold by Marubeni and considers all expenses incurred by Marubeni. This is allowed.

Charges after ex-factory and upto FOB incurred by Mitsubishi have been adjusted. On the basis of above, the normal value (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. export price (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. Thus the dumping margin is US \$ *** per kg., which is 9.80 % of the export price.

COURTAULD ESPANA, SPAIN

Normal value is based on the weighted average of the selling prices. Price adjustment claimed on account of prompt payment discount, credit cost and inland freight are allowed. During verification the exporter requested to allow a deduction equal to the weighted average commission paid to Indian agent. This request is on the grounds that exports to India are made through an agent whereas sale in Spain are without agent/dealer. However in the absence of substantiation by the exporter even at the time of verification visit, the Authority is not in a position to allow this claim. It is observed in respect of 2.5 dtex that the volume of sale in domestic market is negligible (*** tonnes) and the company is selling the product at a loss. Therefore its domestic price claimed can not be considered to calculate the normal value. Accordingly the normal value of 2.5 dtex is calculated on constructed cost, which is *** USD per kg.

Export price

Export price is based on the weighted average selling prices. Adjustments have been made on account of commission/rebate credit cost, inland freight, handling, ocean freight and insurance.

On the basis of above, the normal value (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. export price (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. Thus, the dumping margin is US \$ *** per kg., which is 38.01% of the export price.

MONTEFIBRE ITALY**Normal value**

Normal Value is based on the weighted average selling price. Adjustments on account of prompt payment, quantity discount, transport cost, promotion, advertisement, R&D, technical services cost and stock (warehousing and financing cost) have been claimed.

Prompt payment and quantity discount has been claimed on an estimation. It is claimed that it varies from 1 to 4% and therefore an average of 2% has been used to claim the deduction. Since actual data were not made available, claim is not allowed on estimates. Transport cost is the expense incurred by the exporter and therefore is allowed. Regarding promotion, advertising, R&D and technical service, cost it is claimed that these cost are allocated to domestic sales and to EU countries and India is excluded. It is claimed that these R&D projects are for the purpose of product sold within Italy and EU. The Authority does not find justification to allow these expenses in the absence of evidence to establish that the benefits of these activities have been restricted to domestic sales only.

Regarding stock (warehousing and financing) claimed on the basis of inventory holding by the company is not allowed. During verification the exporter requested to allow a deduction equal to the weighted average commission paid to Indian agent. However in the absence of substantiation by the exporter even at the time of verification visit, the Authority is not in a position to allow this claim.

Export price

Export price is based on the weighted average selling prices. Adjustment on account of commission, inland transport, overseas transport and insurance have been allowed.

On the basis of above, the normal value (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. export price (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. Thus the dumping margin is US \$ *** per kg., which is 24.43% of the export price.

FISIPE PORTUGAL**Normal value**

Normal Value is based on the weighted average selling prices. Adjustments have been claimed on account of discount, inland freight, storage charge and cost of credit. The expenses on discount and inland freight are on the basis of expenses incurred and hence allowed. Regarding storage, it is observed that adjustment on account of storage cost has been claimed on the basis of excess inventory holding by the company. This expenditure is not allowed. The cost of credit has been worked out on approximation basis and may be allowed at USD *** per kg as there is difference in the terms of sales in domestic market and export market. During verification the company has also claimed adjustment on account of technical assistance (expenses incurred in giving assistance to their domestic customers and travelling expenses). The expenditure on this account is allowed.

Export price

Export price is based on the weighted average selling prices. Adjustments have been made on account of discounts/commission, inland freight, overseas freight, overseas insurance and shipping charges.

On the basis of above, the normal value (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. export price (ex-factory basis) is determined at US \$ *** per kg. Thus the dumping margin is US \$ *** per kg., which is 10.85 % of the export price.

K. INJURY

12. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article..." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Annexure II(iii) under rule 11 supra further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from subject country are more than the limits prescribed above. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the export prices from the subject country were directly competing with the prices offered by the domestic industry in the Indian market.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

a. Quantum of Imports

The total imports of acrylic fibre were 8195 MT, 10482 MT and 21114 during 94-95, 95-96 and 96-97. Thus the increase was 27.9% in 95-96 over 94-95 and 101% in 96-97 over 95-96. The increase was 158% in 96-97 over 94-95. Thus the quantum of imports have significantly gone up during the period of investigation. The quantum of imports from the said countries was 3733 MT, 3396 MT and 9548 MT in 94-95, 95-96 and in 1996-97. It is observed that quantum of imports from said countries decreased in 95-96 over 94-95 but in 96-97, it has gone up by 181% over 95-96. Thus there is a significant rise in imports from said countries over the years. The quantum of imports from other countries was 4462 MT, 7086 MT and 11566 MT in 94-95, 95-96 and 1996-97. The share of said countries in total imports were 45.52%, 32.40% and 45.22%.

(b) Production and capacity utilisation

It is observed that the production capacity and production of the petitioners (viz Indian Acrylic, JK, Pasupati & Consolidated) are as

Year	Capacity(MT)	Production(MT)	Capacity Utilization
1994-94	60,000	54717	91.2%
1995-96	68,000	48186	70.8%
1996-97	73,000	61187	83.8%

The additional capacities were generated by M/s Indian Acrylics over the years. It is also observed that the capacity utilisation of JK Synthetics were 66%, 28% and 29% in 94-95, 95-96 and in 96-97. The capacity utilisation of Pasupati, Consolidated and Indian Acrylic were 98%, 103% and 107%. Thus it is observed that the increase in production in 96-97 was 27% over 95-96 during this period whereas the growth in installed capacity was 7.35%. It is also observed that overall low capacity utilization during the period of investigation was due to extremely low capacity utilisation of JK Synthetics and other company's capacity utilization was in the range of 98% to 107%.

c. Sales and Market share

It is observed that demand of acrylic fibre was 83200 MT, 82000 MT and 101000 MT in 94-95, 95-96 and in 1996-97 respectively. The share of imports in total demand was 9.80%, 12.8% and 21% in 94-95, 95-96 and in 96-97 respectively. The share of Indian producers were 90.2%, 87.2% and 79% respectively in 94-95, 95-96 and in 1996-97. Thus it is observed that the share of imports are rising in total demand and the share of Indian Industry is going down in the total demand.

(d) Closing stocks

It is observed that the closing stocks of petitioner were 1255 MT, 381 MT and 2095 MT in 94-95, 95-96 and in 96-97 respectively. Closing stocks have significantly gone up in 96-97 over 95-96. It is also observed that out of 2095 tonnes of closing stock , 1545 MT was held by Indian Acrylic.

(e) Price undercutting and price depression

The petitioner companies have stated that imports from subject countries have been undercutting the prices of the fibre being sold by the Indian producers. The consumer industry is forcing Indian Industry to reduce the price under the pretext of cheaper imports from the subject countries. In view of this, they are forced to offer heavy discounts due to threat posed by the dumped imports. Inspite of increase in cost of producing acrylic fibre, the Indian Industry is being prevented from increasing their selling prices. The average selling price of the petitioner has increased marginally inspite of increase in ACN prices. Thus the dumped imports from subject countries have suppressed the prices of fibre and caused immense losses to the petitioner. It is claimed that average selling prices were Rs.***, ***, *** and *** during 93-94, 94-95, 95-96 and 96-97. It is also shown that losses of the petitioner companies was 46 crores, 71 crores and 54 crores in 94-95, 95-96 and 96-97 respectively. However, it is observed that different producers are charging different selling prices and profit/loss of different companies varies.

It is observed that the selling price charged were Rs. ***/-, Rs. *** Rs. *** and Rs.*** by JK, Pasupati, Consolidated and Indian acrylic. At this price level, JK had suffered a loss of 29.66crores, and Consolidated suffered a loss of Rs. 38.72 crores. However, Pasupati has earned a profit of Rs. 2.59 crores and Indian Acrylic has earned a profit of Rs. 12.17 crores during the period if investigation.

(f) Expansion of capacity

It is stated that the plant of Indian acrylic was designed in such a way that the capacity was to be increased from 12000 MT to 35000 Tonnes in stages. However the company is finding it difficult due to financial constraints.

(g) Ability to raise funds

It is claimed that most of petitioner companies are finding it difficult to repay loans and interest thereon. Moreover, due to inability to service the loan already taken, they are not able to raise funds further. This is affecting their future plans of expansion. It is also stated that domestic industry is incurring substantial cash losses resulting in negative cash flow. They are not able to get reasonable return on the investment.

(h) The petitioner has claimed that with extensive research and development, the usage of acrylic fibre can be increased. However this require extensive R&D efforts but which can not be done by Indian Industry as even its survival is at stake in the wake of continuos dumping.

L. CONCLUSION ON INJURY

13. In view of the foregoing paragraphs it is observed that:

- a) quantum of imports from subject countries have increased in absolute terms and relative to consumption in India,
- b) the market share of the petitioner companies has gone down,
- c) the domestic industry has been forced to sell at prices below its fair price resulting into losses or very low returns on investments,
- d) the imports are undercutting the prices of the domestic industry,
- e) closing stock of domestic industry has gone up ,
- f) the domestic industry is not in a position to expand their capacities and do not have sound liquidity position.

The Authority, therefore, concludes that the domestic industry has suffered material injury.

M. CAUSAL LINK

14. In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the imports from the subject countries, the Authority holds that increase in market share of imports from Japan, Portugal, Italy and Spain resulted in decline in the market share of the petitioner, were undercutting the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell below its fair price. Resultantly, the domestic industry was not in a position to recover fair selling price. The material injury to the domestic industry was, therefore, caused by the dumped imports from the said countries.

N. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

15. The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

16. It is recognized that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures, particularly if the levy of the anti dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of Acrylic Fibre. Imposition of anti dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

17. To ascertain the extent of anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority rely upon reasonable selling price of Acrylic Fibre in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilization for the domestic industry.

Q. LANDED VALUE:

18. The landed value of imports is determined on the basis of export price of Acrylic Fibre, determined as detailed above in the para relating to dumping, after adding the prevailing level of customs duties and one percent landing and two percent handling charges.

P. CONCLUSIONS:

19. It is seen, after considering the foregoing, that:

- (a) Acrylic Fibre described under para 5 and originating in or exported from Japan, Spain, Portugal and Italy has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- (b) The Indian industry has suffered material injury
- (c) The injury has been caused cumulatively by the imports from the subject countries.

20. It is considered necessary to impose anti dumping duty, provisionally, pending final determination, on all imports of Acrylic Fibre originating in or exported from the subject countries, pending investigations.

21. It was considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove the injury. Landed price of the imports, for the purpose, was compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigations. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, it is proposed that provisional anti dumping duties be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all Acrylic Fibre originating in or exported from Japan, Spain, Portugal and Italy falling under Customs sub-heading 5501.30 and 5503.30 of the Customs Tariff Act, pending final determination. The anti-dumping duty shall be the difference between the amounts mentioned in column 4 and the landed price of imports per Kg. as per details below subject to a minimum anti-dumping duty per kg. as shown in column 5 below:

S. No. 1	Country 2	Name of the Producer 3	Amount 4 (Rs)	Amount 5(Rs)
1.	Japan	Asahi Mitsubishi Rayon Toyobo Inc. Any other exporter	82.97 80.39 77.45 82.97	9.04 5.32 2.87 9.04
2.	Spain	Any exporter	82.97	13.35
3.	Portugal	Any exporter	74.21	5.04
4.	Italy	Any exporter	82.97	11.12

22. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

Q. FURTHER PROCEDURE:

23. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:

- a. The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- b. Exporters, importers, petitioners and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days of the despatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.
- c. The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions;
- d. The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

RATIJI VINAY JHA, Designated Authority

